सोनार बांगला

राजभाषा पत्रिका

पर्यावरण विशेषांक

13 वां अंक

वर्ष - 2018

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय

(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स

प्रथम तल, 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता-700001

दूरभाष:-033-2213-3151/3163 फैक्स:-033-2213-3174

वेबसाईट:-www.agwb.cag.gov.in

ई-मेल पता:- pagkolhindicell@mail.com

सत्यमेव जयते

सोनार बांगला

राजभाषा पत्रिका

13 वां अंक

वर्ष - 2018

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय

(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स,

प्रथम तल, 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता-700001

दूरभाष:-033-2213-3151/3163 फैक्स:-033-2213-3174

वेबसाईट:-www.agwb.cag.gov.in

ई-मेल पता:- pagkolhindicell@mail.com

सोनार बांगला परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री एम. एस. सुब्रहमण्यम, प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री श्रीराज अशोक, उप महालेखाकार (प्रशासन)

श्री रनेन्दु सरकार, वरिष्ठ उप महालेखाकार (सा.एवं सा. क्षेत्र-I)

श्री विजय एस, उप महालेखाकार (सा. क्षेत्र-II)

श्री मनोज कुमार मोवार, कल्याण अधिकारी

लेख जाँच एवं पुनरीक्षण समिति

अध्यक्ष :- श्री मनोज कुमार मोवार, कल्याण अधिकारी

सदस्य :- श्रीमती रून्ना बन्धोपाध्याय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सदस्य :- श्रीमती ओलिभ बारा, पर्यवेक्षक

सदस्य :- श्रीमती गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सम्पादक मंडल

प्रधान सम्पादक

श्रीमती रानी मगदालीना एक्का
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सम्पादक

श्रीमती ओलिभ बारा
पर्यवेक्षक

श्री संदीप कुशवाह
कनिष्ठ अनुवादक

सहयोगी सम्पादक मंडल

श्री प्रशांत कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री रश्मि प्रसाद
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अरुण विकास
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

टंकण कार्य

श्री सोनु कुमार चौधरी
आँकड़ा प्रविष्टक

पत्रिका के मुख पृष्ठ पर दिया गया माँ दुर्गा का चित्र श्री सायन बनर्जी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा बनाया गया है।

अस्वीकरण :- लेखक / रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं। उनके विचारों से मुख्य संरक्षक / संरक्षक / लेख - जाँच - समिति / सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रम सं	लेख/ रचना	लेखक/रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	विभागाध्यक्ष का संदेश	श्री एम. एस. सुब्रहमण्यम	01
2.	उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	श्री श्रीराज अशोक	02
3.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-I) का संदेश	श्री रनेन्दु सरकार	03
4.	उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-II) का संदेश	श्री विजय एस	04
5.	कल्याण अधिकारी का संदेश	श्री मनोज कुमार मोवार	05
6.	प्रधान सम्पादक की कलम से	श्री रानी एम एक्का	06
7.	प्रशंसनीय पत्र		07-08
	लेख/स्वानुभूति/जीवन दर्शन		
8.	शब्दों का मानवीय संचार में महत्व	श्री कुमार अजय पटेल	09
9.	समर अभी भी है बाक़ी	श्री संदीप कुशवाह	10
10.	जिन्दगी की रफ्तार	श्रीमती ओलिभ बारा	11-13
11.	स्वामी विवेकानन्द	श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली	14
12.	बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ	गुंजा कुमारी	15
13.	जीवन का सार	श्री ओम प्रकाश चौधरी	16
14.	पासवर्ड बदल गया	श्री संदीप कुशवाह	17-20
15.	सोनार बांगला और इसका मुख पृष्ठ	श्रीमती रूना बंधोपाध्याय	21
	कविता/गीत		
16.	शुचिता	श्री मनोज कुमार मोवार	22
17.	यादें	श्री तरुण कुमार गोस्वामी	23
18.	सावन के रंग	ओलिभ बारा	24
19.	सोचता हूं मैं	श्री अरुण विकास	25
20.	पापा	श्री प्रभात कुमार	26
21.	बेटी के पिता का आह्वान	श्री प्रशांत कुमार	27-28
22.	मन का भँवरा	श्री ओम प्रकाश चौधरी	29
23.	वीरों की शहादत	श्री मनोज कुमार मोवार	30
24.	ऑडिटर बाबू	श्री प्रभात कुमार	31
	पर्यावरण विशेष		
25.	स्वच्छ भारत : सपना या हकीकत	मनोज कुमार मोवार	32-35
26.	प्रदूषण मुक्त भारत - कैसे बनेगा	श्री उत्पल चटर्जी	36-37
27.	जल संचयन	श्री संदीप सिन्हा	38-39
28.	ग्लोबल वार्मिंग : एक गम्भीर समस्या	श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली	40-41
29.	पेड़ भी उदास होते हैं	श्री अरुण विकास	42
30.	पानी	श्री सोनु कुमार चौधरी	43
	कार्यालयीन गतिविधियां		
31.	हिन्दी पखवाड़ा : कार्यक्रम व विजेता सूची	स्रोत : हिन्दी अनुभाग	44-50
32.	खेल-कूद एवं अन्य गतिविधियां	स्रोत : कल्याण अनुभाग	51-53
33.	नवनियुक्ति एवं सेवानिवृत्ति	स्रोत : प्रशासन I एवं III	54

विभागाध्यक्ष का संदेश

वर्ष भर की सुन्दर यादों एवं साहित्य से परिपूर्ण रचनाएं समेटे हुए राजभाषा पत्रिका **"सोनार बंगला"** का यह 13 वां अंक पाठकों को अवश्य ही पसंद आएगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। जीवन के विविध रंगों यथा जीवन दर्शन, कविता,गीत, व्यंग्य तथा समसामयिक विषयों को पत्रिका में सहेजने का यह सराहनीय प्रयास है। प्रत्येक व्यक्ति में विचारों का निरंतर संचार होता रहता है - केवल आवश्यकता होती है, उन विचारों को लेख का आकार प्रदान करने की। कार्यालयीन पत्रिकाएं कर्मियों को यही मंच प्रदान करती हैं।

राजभाषा पत्रिका " सोनार बंगला " की रचनाओं एवं पत्रिका के स्तर में जो निरंतर उत्कृष्टता रहती है उसके लिए रचनाकार एवं सम्पादक मंडल निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कर्मियों में जो राजभाषा के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव है, वह निरंतर बना रहे यही मेरी कामना हे।

एम. एस. सुब्रह्मण्यम

एम. एस. सुब्रहमण्यम
प्रधान महालेखाकार

उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश

राजभाषा पत्रिका "सोनार बांगला" कार्यालय प्रधान महालेखाकार की पत्रिका मात्र नहीं है, अपितु यह बंगाल की समृद्ध संस्कृति की अभिव्यक्ति भी है। पत्रिका में प्रस्तुत लेख न केवल कार्यालय के कर्मियों के राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम को दर्शाते हैं अपितु अन्य कार्यालयों को भी राजभाषा हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रेरणा प्रदान करते हैं।

आशा है कि पत्रिका का नवीनतम अंक सभी को पसन्द आयेगा। मैं पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को उत्तम सम्पादन के लिए बधाई देता हूँ। मेरी कामना है कि पत्रिका की यह सफल यात्रा ऐसे ही जारी रहे।

श्रीराज अशोक
उप महालेखाकार (प्रशासन)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-I) का संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "सोनार बांगला" के 13 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभुति हो रही है। इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन के कार्य को गति मिलेगी। मेरी कामना है कि "सोनार बांगला" का प्रकाशन इसी प्रकार उत्साहपूर्वक जारी रहे व इसकी सहजता एवं सरलता सभी को योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करती रहे।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशनार्थ किया गया प्रयास अवश्य ही सफल होगा। इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को उनके कार्य एवं प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

आर. सरकार.

श्री रनेन्दु सरकार
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(सा. एवं सा. क्षेत्र-I)

उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-II) का संदेश

"सोनार बांगला" पत्रिका में विभिन्न लेखों एवं रचनाओं से योगदान देने के लिए मैं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा भविष्य में भी ऐसे ही योगदान की आशा करता हूँ, ताकि हमारे कार्यालय में हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति सुनिश्चित रहे।

विजय एस

उप महालेखाकार सामाजिक क्षेत्र -II

राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए हमारा कार्यालय पुनः हिन्दी वार्षिक पत्रिका "सोनार बांगला" का संस्करण (13 वाँ) प्रकाशित करने जा रहा है।

अहिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की यह उपलब्धि सराहनीय है, जिनके अनवरत प्रयास के कारण 'सोनार बांग्ला' आज जीवन के 13 वें वसंत में प्रवेश कर रहा है। मैं इस शुभ अवसर पर कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 'सोनार बांग्ला' के सृजन में योगदान दिया है। साथ ही हिन्दी अनुभाग से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने पत्रिका के संकलन व प्रकाशन को तय समय-सीमा के अन्दर संभव कर दिखाया।

हमारे कार्यालय की "सोनार बांगला" पत्रिका अपने नाम को चरितार्थ करते हुए हिन्दी के कार्यालयीन साहित्याकाश में सितारे की तरह हमेशा चमचमाती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

कल्याण अधिकारी

हमारे कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका “सोनार बांगला” के 13 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं हिन्दी में सृजनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यालयीन पत्रिका "सोनार बांग्ला" का नवीन प्रकाशन पाठकों को अवश्य पसंद आएगा, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं पत्रिका के सफल संकलन एवं प्रकाशन पर हिन्दी पत्रिका से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करती हूँ। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में “सोनार बांगला” हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में महती भूमिका निभायेगी। पत्रिका की सफलता के लिए मेरी शुभकामना स्वीकार करें।

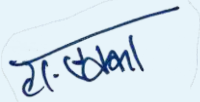

रानी मगदालीना एक्का
प्रधान संपादक (सोनार बांगला)

हिन्दी पत्रिका सोनार बांगला के 12 वें अंक से संबंधित प्रशंसनीय पत्र

16-क्र/सा-पत्र/153
12/01/18

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एंव पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यलय,बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER AUDIT BOARD, BANGALORE-560001.

सं.हि.प्रशा.-2017-18/ 323 दिनांक-14.12.2017

सेवा में,
प्रधान संपादक (सोनार बांगला)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा. हिन्दी)
प्रधान महालेखाकार (सामान्य और सामाजिक क्षेत्र, लेखापरीक्षा)
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डींग-2, गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम)
कोलकाता

विषयः- प्रशंसा पत्र।

आपके कार्यालय से "सोनार बांगला" का 12 अंक प्राप्त हुआ। रचनाएँ मनभावन है जिसमें समसामयिक विषयों से लेकर हर तरह के विषयों से संबंधित रचनाएँ समाहित हैं। भिन्न-भिन्न कविताओं ने पत्रिका में अपनी एक विशिष्ट छटा बिखेरी हैं। रंग-बिरंगी पत्रिका देखने में बड़ी लुभावनी है जिसमें कार्यालयीन चित्रों ने चार चाँद लगा दिए है।

उत्तम पत्रिका के प्रकाशन हेतु साधुवाद।

धन्यवाद

भवदीय

लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

16-क्र/सा-पत्र/
25/01/18

पंजीकृत-डाक/शीघ्र-डाक हिन्दी अनुभाग/प्रतिभाव प्रेषण /288
18-01-2018

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट
Office of The Accountant General (A&E) Gujarat, Rajkot.

Phone No: 0281-2441600-06(PBX) Fax No: 0281-2456238
Email: agaerjt ad1@sancharnet.net

सेवा में ,
हिन्दी अधिकारी एवं संपादक **'सोनार बांगला'**
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (सामान्य और सामाजिक क्षेत्र, लेखा परीक्षा)
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2,
गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता-700001

विषय: हिन्दी पत्रिका **'सोनार बांगला'** के 12 वें अंक की प्राप्ति ।

महोदय,

आपकी विभागीय हिन्दी पत्रिका **'सोनार बांगला'** के 12 वें अंक की एक प्रति साभार प्राप्त हुई । पत्रिका पृष्ठचयन, मुद्रण एवं संपादन की दृष्टि से यह अंक सराहनीय है । यह पत्रिका कविताओं, वर्ग-पहेलियों और फ़ोटोज़ आदि से संपन्न है। **श्री संदीप सिन्हा** का आलेख **"राजभाषा एवं राष्ट्र भाषा"** ज्ञानवर्धक है। साथ ही **श्री संदीप कुशवाहा** की रचना **"अनुवादक हूँ मैं"** अनुवाद पर निर्भर हिंदी कार्यों की ओर वक्र संकेत है।

रचनाकारों, संपादकमण्डल व पत्रिका परिवार को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय

(एम. जे. चंदे)
कल्याण एवं हिंदी अधिकारी

09-01-18

PRAG (G&SSA)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपूर

ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II MAHARASHTRA, NAGPUR

- 4 JAN 2018
Office of the Pr. Accountant General Audit
G & S S West Bengal
Treasury Buildings, Kolkata-700001

सं.हिंदी अनुभाग/ प्रतिक्रिया/22/2017-18/जा.क.-2
दिनांक :29-11-2017

सेवा में,
व.लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य और सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

विषय: हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 12वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की **हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई,** सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री मनोज कुमार मोवार का लेख "दिव्य दर्शन की अनुभूति", श्री संदीप सिन्हा का लेख "राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा", सुश्री राजलक्ष्मी गांगुली का लेख "माध्यम भाषा के रूप में हिंदी का महत्व", श्री प्रभात कुमार की कविता "आनंद की नगरी कोलकाता", श्री मनोज कुमार मोवार का व्यंग्य "मोबाइल की माया" आदि रचनाएं रोचक तथा ज्ञानवर्धक है। साथ ही श्री संदीप कुशवाह द्वारा रचित "राजभाषा वर्ग पहेली रोचक है । कार्यालयीन चित्र पत्रिका की सुंदरता को बढाते है। पत्रिका का प्रत्येक पृष्ठ रंगों से परिपूर्ण है तथा पत्रिका को निखारता है।

पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

12 DEC 2017

16-क्र/सा-पत्र/167
23-01-18

19 JAN 2018
Treasury Buildings, Kolkata-700001

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
उ0प्र0, इलाहाबाद
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Accountant General
(Accounts & Entitlement)-I
U.P., Allahabad

प0सं0 हि0अ0/पत्रिका/101933
दिनांक : 12.01.2018

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सा0और सा0क्षे0ले0प0)–पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्नमेन्ट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता–700001

विषय :– हिन्दी पत्रिका "सोनार बांगला" के 12वें अंक की प्राप्ति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "सोनार बांगला" के 12वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर सन्त मदर टेरेसा का वात्सल्यमयी चित्र हृदय को बरबस ही मोह लेता है। पत्रिका में प्रदर्शित हिन्दी से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ मनमोहक हैं। संकलित सभी लेख एवं रचनायें तथा उनका प्रस्तुतीकरण उत्तम है। विशेष रूप से श्री मनोज कुमार मोवार का लेख "दिव्य दर्शन की अनुभूति" अध्यात्मिक है। श्री संदीप सिन्हा का लेख "राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा" हिन्दी के सशक्तीकरण की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। श्री उत्पल चटर्जी का लेख "स्वच्छ भारत एक चुनौती" अत्यन्त तथ्यपरक है। श्री ओम प्रकाश चौधरी की कविता "अहसास उन दिनों का" प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उत्कृष्ट मुद्रण एवं सम्पादन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं!

भवदीय

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी

हिन्दी पत्रिका सोनार बांगला के 12 वें अंक से संबंधित प्रशंसनीय पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

पत्रांक : हिन्दी/सामान्य-विविध/25-2018/151
दिनांक : 02.04.2018

सेवा में,

कार्यालय - प्रधान महालेखाकार
(सामान्य और सामाजिक क्षेत्र, लेखा परीक्षा),
पश्चिम बंगाल ट्रेजरी बिल्डीगंस, 2, गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता - 700 001

विषय: हिंदी वार्षिक पत्रिका "सोनार बांगला" के 12वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

पत्र सं. हिन्दी कक्ष/सोनार बांगला/370, दिनांक: 04.01.2018 द्वारा "सोनार बांगला" की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका को प्रभावी बनाने तथा पाठकों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने हेतु आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं राजभाषा हिन्दी के प्रति आपके प्रयासों को सार्थक करती हैं। रचनाओं में विशेष रुचिकर - "राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा", "माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व", "संत मदर टेरेसा", "भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक", "ऐसा देश है मेरा", "कर्म ही धर्म", "आनंद की नगरी कोलकाता" "स्वच्छ भारत : एक चुनौती", और "माँ" अतिउत्तम एवं शिक्षाप्रद हैं। अन्य रचनाओं को भी साधुवाद। नि:संदेह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के सच्चे अर्थों में समर्पित होकर सेवा कर रही है।

ऐसे पठनीय अंक के लिए सम्पादक मंडल को बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

डाक व दूरसंचार लेखापरीक्षा कार्यालय
सी-स्कन्ध, चौथी मंजिल, प्रशासनिक इमारत,
जुहू टाड़ा रोड, सांताक्रूज (पश्चिम)
मुंबई-400054
दूरध्वनि : 26610833, 26611433
फ़ैक्स: 26611440

POSTS AND TELECOMMUNICATIONS AUDIT OFFICE
C-Wing, 4th Floor, Admn. Bldg., Juhu Telecom Complex, Santacruz (W), Mumbai-400054.
Phone : 26610833, 26611433
FAX: 26611440

क्रमांक: हिन्दी/सी-453/104
दिनांक:30/01/2018

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय: प्रधान महालेखाकार (सामान्य और सामाजिक क्षेत्र, लेखापरीक्षा)
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स,प्रथम तल, 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700001

विषय :- हिंदी पत्रिका "सोनार बांगला" के 12 वें अंक के प्रेषण के संबंध में।
संदर्भ :- हिन्दी कक्ष / सोनार बांगला /406 दिनांक 08.01.2018

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय से संदर्भित पत्रानुसार, हिन्दी पत्रिका **"सोनार बांगला"** के 12 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानप्रद, मनोरंजक तथा रुचिकर हैं तथा पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट दर्जे की है। श्री प्रभात कुमार द्वारा लिखित लेख 'भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक' और कविता 'आनंद की नगरी कोलकाता' दोनों ही बेहतरीन रचना है। श्री ओमप्रकाश चौधरी की कविता 'एहसास उन दिनों का' जीवन की पगडंडियों का मार्मिक स्फुरण करती है। राजभाषा हिंदी से संबंधित विशेषांक होने के नाते पत्रिका का यह अंक अधिक प्रासंगिक हो गया है। पत्रिका में संकलित चित्र कार्यालयीन स्मृतियों को ताजा कर देते हैं।पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को एवं रचनाकारों को बधाई तथा पत्रिका के उतरोत्तर प्रगति हेतु इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय - महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा: भुवनेश्वर - 751001
O/o the Accountant General (A&E), Odisha, Bhubaneswar - 751001

संख्या-हिप्र/पत्रिका/250
दिनांक- 13.02.2018

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार
(सामान्य और सामाजिक क्षेत्र, लेखापरीक्षा),
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700 001

विषय: हिंदी पत्रिका "सोनार बांगला" की प्रतिक्रिया का प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सोनार बांगला" के 12वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं । माध्यम भाषा के रुप में हिंदी का महत्व, डिजिटल भारत : उन्नति की नई दिशा, स्वच्छ भारत एक चुनौती, संत मदर टेरेसा, ऊर्जा का महत्व एवं कर्म ही धर्म विशेष रुप से प्रशंसनीय रचनाएं हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी अधिकारी

डाक व दूरसंचार लेखापरीक्षा कार्यालय हैदराबाद - 500 001

पत्र संख्या- प्रशासन/ इए VI/ए-3/हिंदी पत्रिका/4132
दिनांक-18.01.18

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार(सा. और सा.क्षेत्र, लेखापरीक्षा). प.बंगाल,
टैजरी बिल्डिंग, 2, गर्वमेंट प्लेस(पश्चिम)
कोलकाता- 700 001

विषय- हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' के 12वे अंक के संबंध में ।
संदर्भ- आपका कार्यालय पत्र संख्या- हिंदी कक्ष/सोनार बंगला/411 दिनांक 08.01.18

महोदय,

उपरोक्त संदर्भ में हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' के 12वे अंक की एक प्रति इस कार्यालय में प्राप्त की गई । इस पत्रिका की सभी रचनांए प्रेरणास्पद, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं । पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)

शब्दों का मानवीय संचार में महत्व

कुमार अजय पटेल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शब्द मात्र 7% मानवीय संचार का यंत्र है। शेष 93% मानवीय संचार अन्य प्रकार से होता रहता है। एक मानव जब बोलता है, सुनता है, चलता है, काम कर रहा होता है अथवा काम करवा रहा होता है, उसके खाने का ढंग, उसके कपड़े की स्वच्छता और रंग, उससे संबन्धित प्रत्येक चीज उस मानव विशेष के बारे में कुछ-कुछ सम्प्रेषण कर रही होती है। ऐसे सम्प्रेषण में शब्दों का प्रयोग नहीं होता, तब भी समझने वाले अपनी- अपनी तरह से उस कही जा रही बात का अर्थ समझ लेते हैं।

कोई कहता है कि सत्य वचन बोलना चाहिए। कोई कहता है कि मृदुभाषी होना अच्छा होता है। किन्तु शब्दों के द्वारा संचार की उपयोगिता तभी तक है, जब तक वह वातावरण को मौन की ओर प्रेरित करता है अन्यथा उन शब्दों को सुनने वाला कोई नहीं रह जाता। उस संचार में सम्मिलित सभी लोग बस बोलने में मग्न रहते हैं। परिणामस्वरूप वातावरण में कांव-कांव-सा शब्द प्रदूषण फैलने लगता है। कुछ लोग बोलने के बजाए लिख कर शब्दों का संचार करते हैं। लिखित संचार द्वारा मानवीय स्वतन्त्रता को बढ़ावा मिलता है क्योंकि उपयोगकर्ता की स्वतन्त्रता होती है कि वो अपने इच्छित समय पर उस लिखित संचार को यथेष्ट मात्रा में ग्रहण कर सके। इसका एक अन्य लाभ है कि ध्वनि प्रदूषण भी सीमित रहता है। यह सर्वविदित है कि ध्वनि-प्रदूषण भी मानवीय स्वास्थ्य के लिए घातक है। हमारे पूर्वजों ने लोकोक्तियों द्वारा हम लोगों को शब्दों के सार्थक प्रयोग पर समझ की नसीहत दी है कि-

"ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होए।"

शब्दों को बोल देने मात्र से सार्थक संचार नहीं होता है। उचित देश-काल में उचित शब्दों का चयन, उनके विन्यास और मधुर स्वर का भी विशेष महत्व है। अन्य विधियों से सतत हो रहे सम्प्रेषण को ग्रहण कर मानव उसका उपयोग अपने देश-काल के लिए करता है। अधिकांश मानवीय झगड़ों के आरंभ का मूल कारण कथित शब्दों के अनुपयुक्त चयन को माना गया है। सम्प्रेषण के दौरान हमें इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि बोले गए शब्द प्रभावी हों । शब्द में वह शक्ति है जो किसी के मानसपटल पर गहरी छाप छोड़ जाती है। इसलिए शब्द को ब्रह्म भी कहा गया है।

"बेतुके झगड़े कुछ इस तरह ख़त्म कर दिये,
जहां गलती नहीं भी थी मेरी, हाथ जोड़कर चल दिये"

शब्दबल में दोनों ही क्षमताएं होती हैं- संरचनात्मक तथा विध्वंसात्मक। द्रौपदी द्वारा प्रयुक्त शब्द "अंधे का बेटा अंधा होता है" इतिहास में महाभारत का कारण बना। वैज्ञानिक शोधों द्वारा स्थापित है कि एक साधारण मानव प्रतिदिन औसतन 10-12 मिनट तक बोलकर शब्दों का सम्प्रेषण करता है, शेष समय में अपने हाव-भाव द्वारा सम्प्रेषण करता रहता है।

ऋग्वेद में भी मीठी वाणी का प्रयोग करने की सलाह दी गई है:-

"या ते जिव्या मधुमति, सुमेधाने देवेषूच्यूत उरुचि॥

अर्थात, हे मानव मीठी व समृद्धी युक्त वाणी का प्रयोग करें।

अन्त में यही कहा जा सकता है - मीठा व उचित बोलिए, ख़ुद भी प्रसन्न होइए, अपनी ऊर्जा बचाइए और दूसरों को भी प्रसन्न कीजिये। शब्दों का उपयोग अवसर और श्रोताओं की समझ के अनुरूप ही करें तो देश-काल वातावरण सबके लिए सार्थक रहता है। इससे न सिर्फ आपकी कद्र और कद बढ़ता है बल्कि सामाजिक परिवेश भी सुवासित रहता है।

समर अभी है बाक़ी

संदीप कुशवाह
कनिष्ठ अनुवादक

माथे पर बहती बूंदें
कांधे पर लेकर हल।
नंगे पांव, धूसर तन
पैदल वो रहा है चल॥

दूर गगन में उड़ते पंछी
अपने घर को लौट चले।
गूंज रहा सारा वन-उपवन
सुन-कर उनका कोलाहल॥

पगडंडी ये टेढ़ी-मेढ़ी
दूर कहीं ढलती शाम।
जैसे उससे रही हो पूछ
कितना बाक़ी है अब बल॥

आगे चलती उसकी प्यारी गैया
प्यार से कहते उसको मैया।
पैर हैं बोझिल, थके - थके से
कहते जैसे जीवन नहीं सरल॥

काची माटी की मोटी दीवारें
छत पर फैली सूखी पियार।
जैसे खुद ही बोल रही हों
बिता लो कुछ फुरसत के पल॥

द्वार खड़ी वो बिटिया प्यारी
ज्यों मूक स्वर में पूछ रही
बाबा क्या आए हो लेकर
खेल-खिलौने जो मांगे कल॥

आस लिए वो मन ही मन
सुंदर सपनों की दुनियाँ में।
छोटा-सा आशा दीप लिए
होंगे सच ये सपने कल॥

कितना कुछ है पल-पल गुजर रहा
हर दिन कुछ खोकर कुछ पाने में।
होना एक समर अभी है बाक़ी
जो कृषक जीवन को बना सके अविरल॥

जिन्दगी की रफ्तार

ओलिभ बारा
पर्यवेक्षक

आज की भाग-दौड़ की जिन्दगी में सबसे आगे निकल जाने की होड़ लगी रहती है। यातायात के नियमों को धत्ता बता सभी चलते चले जाते हैं। प्रतिदिन कहीं न कहीं सड़क दुर्घटनाएँ होती ही रहती हैं। असमय ही कितनों की जिन्दगी की डोर टूट जाती है। आए दिन हम कई हादसों से रूबरु होते रहते हैं, चाहे वह बस से हो या ट्रेन से या अन्य वाहनों से। ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जिसे याद कर मन आज भी आत्मग्लानि से भर जाता है। सोचती हूँ, काश! सहायता के हाथ आगे बढ़े होते तो कितनों की जान बच सकती थी। ऐसी ही एक-दो घटनाओं का, जो मेरी आँखों के सामने घटित हुई थी, वर्णन करना चाहूँगी।

पहली घटनाः स्थान..रेश कोर्स मैदान, कोलकाता के विपरीत दिशा में, द्वितीय विद्यासागर सेतु की ओर जाने वाले मार्ग पर। शाम का समय, तकरीबन 6:30 बजे का वक्त। कार्यालय में सभी अपने-अपने गंतव्य की ओर रवाना होने की तैयारी कर रहे थे। मैं भी कार्यालय से निकलकर अपने घर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ती हूँ। 01 किलोमीटर की दूरी तय करने के पश्चात् अचानक कुछ बाइक सवार लोगों की भीड़ नजर आती है। सभी एक ओर अपनी बाइक खड़ी कर कतार में खड़े थे। कुछ पास आने पर मैंने देखा की सड़क के बीचो-बीच करीब 25-30 वर्ष का युवक औंधे मुँह पड़ा था। उसकी बाइक कुछ ही दूरी पर पड़ी थी। उस युवक के आस-पास कुछ सामान बिखरे पड़े थे। शायद हमारी ही तरह वह अपनी ड्यूटी खत्म कर अपने घर की ओर जा रहा था। मालूम पड़ा कि यह हादसा आधे घंटे पहले ही हुआ था। सभी वाहन-चालक कुछ पल अपनी रफ्तार कम करते, उस युवक पर हल्की नजर डालते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे थे। बाइक सवार राहगीर कतार में खड़े थे, वो भी मूकदर्शक बने थे। उस युवक को देखकर लगता था कि उसके शरीर में अभी भी चंद साँसें बाकी हैं। मैं भी युवक पर हल्की नजरें डाल आगे बढ़ गयी। घटना स्थल पर उपस्थित किसी ने भी न ही सहायता का हाथ बढ़ाया, न ही पुलिस को इत्तला दी।

आगे की होड़ में भागे चले जाते हैं आप,
इसी धुन में रौंदते चले जाते हैं आप।
घर से जब भी निकलता है कोई अपना,
आँखें टिकी रहती हैं इन्तजार में अपनों की।
बीच सड़क पर पड़ा बंदा,
सोचें! वो भी होगा किन्ही अपनों का।

अगली सुबह समाचार पत्रों के माध्यम से पता चला कि किसी निजी वाहन से उस युवक की बाइक की टक्कर हुई थी। कुछ घंटो पश्चात् पुलिस द्वारा उसे करीब के अस्पताल में पहुँचाया गया था, किंतु काफी देर हो चुकी थी। डॉक्टरों की लाख कोशिश के बाबजूद भी उसे बचाया न जा सका। चौंकाने वाली बात सामने आई कि अस्पताल पहुँचने से कुछ समय पहले तक उसकी साँसे चल रही थी। यदि उसी वक्त उस वाहन के चालक ने रूककर इंसानियत के नाते अपना मानव धर्म निभाया होता और उसे सही समय में अस्पताल पहुँचाया होता, तो उस युवक को नयी जिन्दगी मिल सकती थी। वहाँ उपस्थित राहगीरों ने भी तत्परता दिखाते हुए सही समय पर पुलिस को सूचना दे दी होती तो उस युवक की जिन्दगी की डोर यूँ न टूटती।

किसी की जिन्दगी छीनने का,
किसने दिया है आपको हक।
किसी को जिन्दगी दे नहीं सकते आप,
किसी की जिन्दगी छीन भी नहीं सकते आप।

दूसरी घटनाः सांतरागाछी स्टेशन, हावड़ा, सुन्दर पाड़ा बस स्टॉप। सुबह 8 बजे का वक्त। स्कूल-कॉलेज, दफ्तर जाने वालों में आपा-धापी। एक महिला एक हाथ में बच्चे का स्कूल बैग एवं दूसरे हाथ में बच्चे की अँगुली थामें सड़क पार कर रही थी। अचानक मैंने देखा कि एक निजी कार जो पूरी रफ्तार में थी ट्रैफिक सिग्नल को नजर-अंदाज करते हुए उस महिला व बच्चे को धक्का मार कर निकल जाती है। दोनों ही सड़क पर गिर पड़ते हैं। उसी क्षण ट्रैफिक सिग्नल की हरी-बत्ती जल उठती है और सभी वाहन चल पड़ते हैं। कुछ क्षण वहाँ उपस्थित पैदल राहगीरों की साँसे थमी की थमी रह गई। किंतु उनमें से दो युवक एक पल की भी देरी किए बिना दौड़ कर उस महिला व बच्चे को पकड़ कर सड़क किनारे सकुशल ले आते हैं। दोनों को सिर्फ मामूली चोटें आई थी। यदि उन युवकों ने एक क्षण की भी देरी की होती तो कुछ पलों में ही दो जिन्दगियों की लौ बूझ जाती। मैंने देखा कि दोनों युवकों के मुख-मंडल से आश्चर्य-मिश्रित आत्म संतुष्टि झलक रही थी। अक्सर देखा जाता है कि किसी भी हादसे के वक्त मौजूद लोग पुलिस की झंझट में पड़ना नहीं चाहते हैं।

जिन्दगी अनमोल है समझ जाइए,
इसे यू ही न गँवाइए।
समझ में आती जिन्दगी की रफ्तार,
समझ में न आती आपकी रफ्तार।
पल में क्या से क्या हो जाता है,
दो पल रूकने में आपका क्या जाता है।
माना कि चलने का नाम है जिन्दगी,
पर कुछ पल रूकने का नाम भी है जिन्दगी।

तीसरी घटना : खबरों के अनुसार : हाल ही में हरियाणा के भिवानी रेलवे स्टेशन पर मानवता को शर्मशार करने वाली एक घटना प्रकाश में आई। रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में चढ़ते वक्त पैर फिसलने की वजह से गिरे एक व्यक्ति का पैर कट गया। इसके बाद भी उस व्यक्ति ने हिम्मत नहीं हारी और अपना कटा हुआ पैर खुद ही उठाकर पहले प्लेटफार्म पर रखा, फिर अपने एक ही पैर से प्लेटफार्म पर चढ़ गया। वहाँ खड़े कुछ लोग तमाशबीन बने रहे एवं इस घटना का वीडियो बनाते रहे। लेकिन उनमें से किसी ने भी उसकी मदद नहीं की। बाद में किसी ने रेलवे पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस ने उसे हिसार के एक निजी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया। आजकल ऐसा नजारा हमें दिख जाता है, जहाँ हादसे के पश्चात वहाँ उपस्थित लोग घायल व्यक्ति को मदद पहुँचाने के स्थान पर उसका वीडियो बनाने लग जाते हैं। ऐसा लगता है मानों यह वक्त उनके लिए मदद पहुँचाने या दुखः प्रकट करने का नहीं अपितु जश्न मनाने का मौका है।

पहली एवं तीसरी घटना में लोगों की इंसानियत मर चुकी थी, किंतु दूसरी घटना में लोगों की इंसानियत जिंदा थी। महानगर होने के नाते एवं पसंदीदा पर्यटन स्थल होने के कारण कोलकाता में देश की विभिन्न जगहों से भारी संख्या में पर्यटकों एवं यात्रियों का आना-जाना होता रहता है। यहाँ यातायात की विभिन्न सुविधाएं हैं, मसलन स्थानीय रेल सेवा, मेट्रो रेल सेवा, फेरी सेवा, बस-टैक्सी सेवा इत्यादि। कुछ दिनों पहले बाइक ऊबेर सेवा की शुरुआत भी कुछ इलाकों में हुई है। इसके अलावा लोग अपने निजी वाहन, साइकिल, बाइक आदि का भी बखूबी प्रयोग करते हैं। प्रतिदिन लाखों की संख्या में लोग देश-विदेश की यात्रा करते हैं। ऐसे में यातायात के नियमों का उचित अनुपालन न कर हम विभिन्न दुर्घटनाओं को आमंत्रित करते हैं। अक्सर देखा गया है कि समय की कमी या अपने गंतव्य स्थल पर जल्दी पहुँचने की जद्दोजहद में कुछ लोग चलती रेल, बस में सवार होने या उतरने की कोशिश करते हैं, मानों मैराथन दौड़ का अभ्यास कर रहे हों। कुछ लोग चलती लाँच में सवार होते है या उतरते है। कभी-कभी संतुलन न बन पाने के कारण नदी में कूद पड़ते है, मानो ओलंपिक तैराकी में हिस्सा लेना चाहते हों।

दिन-प्रतिदिन होनेवाले सड़क हादसो के मुख्य कारण हैः - यातायात के नियमों का उचित पालन न करना या यात्रा आरंभ करते वक्त अपने वाहन के कल-पुर्जे की उचित जाँच न करना, ट्रैफिक-सिग्नल के नियमों का पालन न करना, वाहन-चालकों में धैर्य की कमी, नशे में वाहन चलाना, वाहन चलाते वक्त मोबाइल में बातें करना, मोबाइल में बात करते-करते रेलवे क्रॉसिंग या रास्ता पार करना, तेज रफ्तार से वाहन चलाना, सड़क पर बनी " फुट ओवर ब्रिज " को व्यवहार में न लाना, सड़क किनारे पैदल यात्रियों के लिए निर्धारित रास्ते का उपयोग न करना, इत्यादि। कुछ हद तक बदहाल सड़कें भी उन हादसों की वजह हैं। किन्तु आजकल देखा गया है कि अधिकतर दुर्घटनाएं राजमार्ग पर होती हैं। जहाँ भारी संख्या में वाहनों का आना-जाना लगा रहता है।

फिक्की कास्केड, जो तस्करी और नकली वस्तुओं के मुद्दे पर काम करने वाला उद्योग संगठन है, की एक रिपोर्ट के अनुसार बाजार में बिकने वाली 30 प्रतिशत फास्ट मुविंग कंज्यूमर गुड्स (एफ एम सी जी) उत्पाद नकली होते हैं। देश की सड़को पर होने वाली करीब 20 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएँ नकली कल-पुर्जों की वजह से होती हैं।

अगर हम कुछ बातों का सही ध्यान रखें तो सड़क हादसों को टाल सकते है, मसलन यातायात के नियमों का सही अनुपालन कर, यात्रा के आरंभ में अपने वाहन के कल-पुर्जों की उचित जाँच, स्वस्थ मन से वाहन का चालन कर, यात्रा के दौरान सही समय पर ही अपने मोबाइल का उपयोग, वाहन की रफ्तार में संतुलन बनाए रखना, इत्यादि। इस तरह यात्रा के दौरान हम अपनी सुझ-बुझ का परिचय देकर सावधान एवं सतर्क रहें तो इन हादसों से बचा जा सकता है। साथ ही साथ केंद्र एवं राज्य सरकार की भी ज़िम्मेदारी है कि वो सड़कों के निर्माण, मरम्मत एवं उनकी देख-रेख में अपनी ज़िम्मेदारी ईमानदारी से निभाएँ।

कायदे, नियम-कानून से सजती है ये जिन्दगी।
गर हम सबमें आए सचेतना, तो सफल हो जाए ये जिन्दगी।।

" सेफ ड्राइव, सेव लाइफ "

स्वामी विवेकानंद

राजलक्ष्मी गांगुली
कनिष्ठ अनुवादक

'उठो, जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति से पूर्व मत रुको' - यह दिव्य उपदेश स्वामी विवेकानंद द्वारा दिया गया था। स्वामी विवेकानंद महामानव के रूप में अवतरित हुए। विश्व के समक्ष हिंदू धर्म और भारतीयता की जो अनुपम छवि स्वामी जी ने प्रस्तुत की वह अद्‌वितीय है। मानव सेवा का लक्ष्य रखते हुए स्वामी जी ने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जो कार्य किए उसके लिए मानव समाज सदैव उनका आभारी रहेगा। भारतीय इतिहास में सनातन धर्म के महान प्रवर्तकों में उनका नाम अग्रणी है।

स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्रनाथ था। उनका जन्म सन् 1863 ई. में कोलकाता में हुआ। वे बचपन से अत्यंत चंचल स्वाभाव के थे। उनकी माता धार्मिक आचार-विचार की थीं। नरेंद्रनाथ पर अपनी माता के धार्मिक विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा जिसके फलस्वरूप वे धीरे-धीरे धार्मिक प्रवृति में स्वयं को ढालते चले गए।

- ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति के लिए उनकी इच्छा बढ़ती गई। इसके लिए उन्होंने संत रामकृष्ण परमहंस की शरण ली। इनकी ओजस्विता को गुरु ने पहचाना और शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया। गुरु रामकृष्ण परमहंस जी से उन्हें मानव जाति के कल्याण व उत्थान के लिए कार्य हेतु प्रेरणा मिली। वे धीरे-धीरे स्वामी परमहंस के परम शिष्य व उनके अनुयायी बन गए। उन्होंने स्वामी जी के सत्संग में रहकर यह समझा कि सन्यास का वास्तविक अर्थ संसार और स्वयं से विरक्ति नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य मानव कल्याण के लिए कार्य करना है।

- उन्होंने वेदों और शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। सन् 1881 ई. में विधिवत् सन्यास के उपरांत वे स्वामी विवेकानंद कहलाए। उसके पश्चात् वे जीवन पर्यंत धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पित हो गए।

- सन् 1893 ई. में अमेरिका के शिकागो शहर में विश्वधर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ जहाँ विश्व के सभी धर्मों के जनप्रतिनिधि एकत्रित हुए। स्वामी विवेकानंद भी सनातन धर्म के प्रतिनिधि के रूप में वहां गए। सम्मेलन में अपनी बारी आने पर वे मंच पर पहुँचे तथा पूर्णतः अद्‌वितीय तरीके से अपना संबोधन 'अमेरिकावासी भाइयों और बहनों' से प्रारंभ किया तो वहाँ बैठे सभी श्रोतागण हर्ष से परिपूरित तथा और भी अधिक एकाग्र हो गए। इसके पश्चात् उन्होंने सनातन धर्म की महानता तथा विशालता और मानव धर्म के प्रति जो ओजस्वी भाषण दिया उसने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। धर्म की इतनी सुंदर और सुदृढ़ व्याख्या इससे पूर्व किसी ने नहीं की थी। धीरे-धीरे स्वामी जी की ख्याति चारों ओर फैलती गई। अनगिनत लोग उनके अनुयायी बन गए। उसके पश्चात् सभी धर्म सम्मेलनों में उन्हें सादर आमंत्रित किया जाने लगा। वे बिना रुके धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करते रहे।

- अमेरिका और इंग्लैंड के अलावा वे अन्य यूरोपीय देशों में भी गए जहाँ अनेक युवक-युवतियाँ उनके शिष्य बन गए। भारत आकर उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। कार्य के प्रति उनका समर्पण बढ़ता ही चला गया। अंततः उनका यही परिश्रम उनकी अस्वस्थता का कारण बना और 1902 ई. में उनका देहान्त हुआ। उन्होंने धर्म के प्रचार-प्रसार में जो भूमिका प्रस्तुत की वह अतुलनीय है। उन्होने भारत का गौरव बढ़ाया और विश्व के समक्ष भारत की अनुपम तस्वीर प्रस्तुत की। उनके कार्य आज भी आदर्श और प्रेरणा स्त्रोत हैं।

बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ

गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" एक सरकारी योजना है जिसकी शुरुआत भारत के प्रधानमंत्री जी ने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत से की। भारतीय समाज में लड़कियों की सामाजिक स्थिति में कुछ सकारात्मक बदलाव लाने के लिए इस योजना का आरंभ किया गया है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम, महिलाओं के अस्तित्व को बचाना, उनकी सुरक्षा एवं बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित करना है । यह योजना न केवल लड़कियों बल्कि पूरे समाज के लिए वरदान साबित हो सकती है। यह योजना ऐसे समय आई है, जब देश महिलाओं की सुरक्षा से जुड़ी समस्याओं जैसे - दुष्कर्म, असुरक्षा, लैंगिक भेदभाव इत्यादि का सामना कर रहा है। इसलिए इस योजना का महत्व और भी बढ़ जाता है।

वर्तमान समय में, अजन्मे बच्चे के लिंग का पता लगाने की तकनीकी आसानी से उपलब्ध है। इसी वजह से कन्या भ्रूण हत्या के मामलों में तेजी से वृद्धि हुई है। भारतीय समाज में लड़कियों के प्रति कुछ लोगों की मानसिकता क्रूर है। कन्या भ्रूण हत्या शताब्दियों से चली आ रही है, खासतौर से उन परिवारों में जो केवल लड़का ही चाहते हैं। अब समय बदल चुका है, हालांकि कुछ परिवार में विभिन्न मान्यताएं आज भी जारी हैं। लोग सोचते हैं कि लड़का बड़ा होकर पैसा कमाएगा और उनका ध्यान रखेगा। इसके ठीक विपरीत दहेज देकर लड़की की शादी करनी होगी और वह घर से चली जाएगी। लोगों का मानना है कि लड़के परिवार का वंश जारी रखते हैं और परिवार के नाम को आगे बढ़ाते हैं। बड़े-बुजुर्ग समझते हैं कि पुत्र होने में ही सम्मान है जबकि लड़की होना शर्म की बात है। परिवार की नयी बहू पर लड़के को जन्म देने का दबाव बनाया जाता है और लड़की होने पर जबरन कन्या भ्रूण हत्या करवायी जाती है। लड़कियों के बारे में 21वीं सदी में लोगों की ऐसी मानसिकता बहुत ही शर्मनाक है। लड़की के जन्म के बाद भी उनके साथ भेदभाव नहीं थमता। स्वास्थय, पोषण एवं शिक्षा की जरूरतों को लेकर उनके साथ पक्षपात होता है।

बेटियों की हालत में सुधार लाने के लिए प्रधानमंत्री जी ने 21 जनवरी, 2015 को "सुकन्या समृद्धि योजना" प्रस्तुत की। हमारी सरकार ने बेटियों की ऊंची पढ़ाई एवं शादी जैसे बड़े खर्चे को पूरा करने की यह योजना प्रस्तुत की थी। इस योजना के तहत लड़कियों को पढ़ाई के लिए एवं शादी के लिए भी आर्थिक सहायता उपलब्ध होगी। इस योजना के तहत लड़के एवं लड़कियों के बीच का भेदभाव खत्म हो जाएगा तथा कन्या भ्रूण हत्या का अंत करने में मुख्य कड़ी साबित होगी।

लड़कियों को बोझ समझने की मुख्य वजह अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी है। महिला सशक्तिकरण से ही समाज को इस पिछड़ेपन से मुक्ति मिलती है। एक शिक्षित महिला अपने साथ पूरे परिवार को आगे ले जाती है। इसलिए आज के समय में यह जरूरी है कि लड़कियों को लेकर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के बीच फैली अंधविश्वासी मान्यताओं और प्रथाओं को खत्म किया जाए। इसके लिए मीडिया और संचार के नए तरीकों को पूरी तरह से इस्तेमाल करने की जरूरत है।

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" हमारे देश के लिए बेहद जरूरी योजना है। इस योजना की वजह से देश, बेटियों का मूल्य समझने लगा है और बहुतों की मानसिकता में भी बदलाव आया है कि बेटियां हमारा धन हैं। यह योजना बचपन में अच्छा पोषण एवं अच्छे स्वास्थय की नींव है। इस योजना के तहत बेटियां सुरक्षित भी रहेंगी और उनकी पढ़ाई भी अच्छे से हो सकेगी जिससे वह समाज में अपनी पहचान बना सकें और अपना जीवन सम्मान के साथ जी सकें।

नया दौर है उसको तुम अपनाओ,
अपनी छोटी सोच को पंख लगाओ।
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,
ऊँचे विचारों की ओर कदम बढ़ाओ।

जीवन का सार

ओम प्रकाश चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कभी-कभी कुछ चीजें हमें अपनी ओर आकर्षित करती हैं और हम उनके आकर्षण में बंध जाते हैं। ये आकर्षण हमें अपनी चकाचौंध में ढक लेता है। हमारी ज्ञान इंद्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं और विष इंद्रियाँ उत्तेजित। इसमें ऐसी क्या शक्ति है कि हम सब कुछ भूल जाते हैं। इन सब चीजों का विश्लेषण करना एक जटिल प्रक्रिया है।

इंसान जन्म लेता है, खेलता-कूदता है, बड़ा होता है, जीविका के साधन यथा नौकरी-व्यवसाय करता है, पैसा जमा करता है, तब तक करता रहता है जब तक बुढ़ापा नहीं आ जाता है, और फिर वह चला जाता है, सब कुछ छोड़ कर। अगर एक इंसान का सक्रिय जीवन अस्सी वर्ष का लें तो हम पाते हैं कि एक आम इंसान केवल अस्सी वर्ष तक इस प्रवृत्ति पर रहता है कि जितना हो सके, जुगाड़ ले ताकि उसके बाद उसके बच्चे-परिवार सुख और शांति से जीवन व्यतीत कर सकें। अक्सर हमें बुजुर्गों से सुनने को मिलेगा की उन्होंने अपने परिवार के लिए ये किया, वो किया। वे हमेशा यही सोचते रहते हैं कि अगर वे नहीं रहेंगे तो उनके परिवार का क्या होगा? इसी तरह चिंतन करते-करते जिंदगी बीत जाती है और बुढ़ापा आ जाता है। अब यही बेचारे बुजुर्ग अपने ही बच्चों की नज़रों में खटकना शुरू हो जाते हैं। बच्चे हमेशा यही सोचते हैं कि ये बुजुर्ग कब लुढ़केंगे और सारी प्रॉपर्टी हमारी हो जाएगी। बुजुर्गों को भी इस बदले हुऐं व्यवहार का कारण पता होता है। वे अक्सर सोचते हैं-

अरमानों को दबा दिया,
मन-तृष्णा को भी मिटा दिया।
अब शून्य-भर बाकी
न कोई चाह न कोई राह॥

क्यों लोग सब कुछ होते हुए भी संतुष्ट नहीं होते ? क्यों हर दिन घोटाले पर घोटाले होते हैं, फिर भी लोग सोते रहते हैं। क्यों दूसरे की आँखों में आँसू देखकर अपनी आँखों में आँसू नहीं आते ? ऐसी कौन सी चीज़ है कि करोड़ों लोग भूखे पेट सोने पर मज़बूर हो जाते हैं। क्यों, क्यों, क्यों...ऐसे कई क्यों हैं जीवन में, इन सब प्रश्नों का उत्तर दे पाना बड़ा ही कठिन है। फिर भी जहां तक मैं सोचता हूँ, मुझे ऐसा लगता है कि इंसान के अन्दर 'लालच' रूपी शैतान है, वही इन सब चीजों का दाता है। हम कितना भी एडवांस क्यों न हो जाएँ, हम अच्छा इंसान तब तक नहीं बन पाएंगे जब तक हमारे अन्दर लालच रूपी शैतान विद्यमान रहेगा।

जैसे खेत खाली
मन भी है खाली।
कुछ बीज़ हैं, जो बो सकूँ,
उन लहराती फसलों को फिर से पा सकूँ।
पर न पा सका उन बीजों को,
जो मन में समा जाएँ।
अर्थहीन जीवन को,
अर्थ नया कुछ सार नया-सा दे जाएँ॥

पासवर्ड बदल गया

संदीप कुशवाह
कनिष्ठ अनुवादक

दोपहर के दो बज रहे थे । अभी लंच का समय ख़त्म ही हुआ था । पास की बिल्डिंग में जो ऑफिस की कैंटीन है, वहाँ से लंच कर अभी लौटा था । बाहर जून की तपती हुई धूप थी, अनुभाग में धीरे धीरे चल रहे टेबल फैन की हवा बड़ी ही शीतल लग रही थी । धम्म से अपनी कुर्सी पर बैठ कर मैंने फैन को अपनी ओर घुमाया, आराम करने के अंदाज में दोनों आँखें बंद कर ली । बड़ा ही सुकून मिल रहा था। बड़े बाबू (हमारे बॉस) किसी फ़ाइल में उलझे हुए थे तो अन्य सहकर्मी तिमाही रिपोर्ट बनाने के लिए अपने कम्प्यूटर पर बिजी थे ।

अचानक मोबाइल फोन की घंटी सुनाई दी.... ट्रिन ट्रिन । इस समय कौन हो सकता है, झुंझलाते हुए जेब से मोबाइल निकाला । “ हैलो.....कौन ” ?? - मैंने धीरे से संयत आवाज में पूछा ।

“ जी मैं स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की मेन ब्रांच से बोल रही हूँ ” - दूसरी ओर से मधुर आवाज आई ।

एक पल में ही सारा आलस्य जैसे काफ़ूर हो गया । दो दिन पहले ही तो गाँव की जमीन बेच कर चार लाख रुपये बैंक में जमा किए थे । ऑफिस के मित्रगण और सहकर्मियों से मिले दो लाख रुपए भी कल ही बैंक में जमा किए थे । बैंक में अप्लाई किया पाँच लाख रुपये का लोन भी स्वीकृत हो गया था । इस बड़े से शहर में एक छोटा सा आशियाना बनाने का विचार था । पिछले दस सालों में छोटी छोटी बचत कर पाँच लाख रुपये जमा किए थे । इस तरह अकाउंट में कुल ग्यारह लाख रुपये जमा थे । बैंक से रुपये मिलते ही अपने घर का सपना पूरा होने वाला था ।

“ हैलो.....!!!” - उधर से पुनः आवाज़ आई ।

एक बार फिर मेरा ध्यान भंग हुआ । “ जी...., जी हाँ बोलिए !!! ” - मैंने कुर्सी से उठते हुए कहा।

“ जी...आपका स्टेट बैंक में कोई सैलरी अकाउंट है ” - उधर से पूछा गया।

“ हाँ... क्यों'!! ” - मैंने उत्सुकतावश मुस्करा कर कहा ।

(शायद लोन की राशि लेने के लिए फोन होगा - मन ही मन मैंने सोचा)

“ आप मेस्टरो कार्ड इस्तेमाल करते हैं या वीज़ा कार्ड ? ”- उधर से पुनः सवाल ।

“ पता नहीं.....” - मैंने कहा ।

“ जी ...अभी-अभी हमें आपके एटीएम कार्ड का पासवर्ड बदलने के लिए रेक्विजिशन प्राप्त हुई है, हम कन्फ़र्म करना चाह रहे हैं कि ये रेक्विजिशन आपके द्वारा ही भेजी गई है ”- उधर से शांत स्वर आया ।

“ जी.....क्या बात कर रहीं हैं आप...” मैंने तेज स्वर में कहा ।

मेरी तेज आवाज़ सुनते ही सभी सहकर्मी मेरी ओर देखने लगे । उनको अपनी ओर देखता पाकर मैं असहज हो गया, मेरे कदम अनुभाग के बाहर की ओर चल पड़े, मेरा दिल अचानक तेजी से धड़कने लगा। अकाउंट में जमा करीब ग्यारह लाख रुपये मेरे पूरे जीवन की कमाई थी । क्या कोई इसे चुराने का प्रयास कर रहा है ? दिमाग सन्न रह गया । मैं तेजी से अनुभाग से बाहर निकल गया ।

“ लेकिन मैंने तो एटीएम पासवर्ड बदलने के लिए कोई भी रेक्विजिशन नहीं दी है ”।

“ ओ माई गॉड ... क्या कह रहे हैं आप ... अगर आपने रेक्विजिशन नहीं दी है तो आप तुरंत अपने कार्ड को ब्लॉक करा दीजिये ... नहीं तो आपको काफी नुकसान उठाना पड़ सकता है । आप कितनी देर में बैंक आ सकते हैं ” - पहली बार उधर से चिंतित आवाज़ आई ।

मेरी तो जैसे जान ही निकल गई थी। " पंद्रह-बीस मिनट में पहुँच जाऊंगा " - मैंने जल्दी से कहा।

" इतनी देर में तो आपके अकाउंट से कुछ भी रकम निकाली जा सकती है...अगर आप अपने कार्ड की डीटेल बताएं तो हम यहाँ से ही आपका कार्ड ब्लॉक कर सकते हैं । आप बैंक पहुँचते ही नए कार्ड के लिए अप्लाई कर सकते हैं " - उधर से फिर वही चिंतित आवाज़ आई ।

मैं तो जैसे इस दुनियाँ में था ही नहीं...वापिस अनुभाग की ओर भागा. ..बैग से एटीएम निकाला ही था कि पुनः पूछा गया, "आपका एटीएम वीज़ा कार्ड है न?"

मैंने कहा, " हाँ "।

" कार्ड का नंबर बताइये " ।

मैं जैसे किसी सम्मोहन जाल में फंसा निरीह प्राणी था...मैंने नंबर बताना शुरू किया ।

" आपको पूरा नंबर बताने की आवश्यकता नहीं है, केवल अंतिम चार अंक बताइये। बाकी डीटेल तो बैंक के पास है ही " - उधर से टोका गया ।

आधे से अधिक अंक तो मैं बता ही चुका था...झुँझलाते हुए मैंने आस पास देखा तो सहकर्मी समीर भाई को अपनी ओर इशारा करते हुए पाया...जैसे पूछ रहे हों कि क्या मैटर है?

परंतु अभी मैं जैसे कोई बात करने कि स्थिति में था ही नहीं...मैंने अंतिम चार अंक बताए ।

समीर भाई के कुछ बोलने से पहले मैं फिर मोबाइल में व्यस्त होते हुए अनुभाग से बाहर निकल गया।

" कार्ड पर जो आपके नाम की स्पेलिंग है... बताइये "

मैंने अपना नाम बताया ।

" नाम बताने के लिए शुक्रिया, आपके कार्ड पर एक वैधता तिथि होगी...बताइये "?

" मार्च 2020 "।

" अब कार्ड को पलटिए...आपको तीन अंक दिख रहे होंगे...कृपया बताएं। किसी पासवर्ड को बदलने के लिए बहुत जरूरी होते हैं और उन अंकों को डाले बिना आपका पासवर्ड रिसेट नहीं किया जा सकता है । "

मैं सोच में डूब गया...उधर से सी0वी0वी नंबर मांगा जा रहा था जो कि मैं देना नहीं चाह रहा था। मैं किसी निष्कर्ष पर पहुँच पता उससे पहले ही उधर से हड़बड़ाती आवाज आई, " क्या आपने अभी अकाउंट से दो हज़ार रुपये निकाले हैं ?"

मैं फिर घबरा गया, जल्दी से कहा, " नहीं "।

" लगता है किसी ने आपका पासवर्ड बदल दिया है और अब आपके पैसों का दुरुपयोग कर रहा है...आप जल्दी से सी०वी०वी नंबर दीजिये ताकि कार्ड ब्लॉक किया जा सके "।

मेरे हाथ में तो जैसे कुछ था ही नहीं । मैंने तीन अंकों का सी0वी0वी नंबर बता तो दिया लेकिन महिला के कहे शब्द जैसे दिमाग में गूंज़ रहे थे जो उसने कार्ड पलटते समय कहे थे..."पासवर्ड बदलने के लिए सी0वी0वी0 जरूरी होता है।"

फोन में कुछ पल सन्नाटा रहा, फिर आवाज़ आई," हमने आपका पासवर्ड बदलने का बहुत प्रयास किया, परंतु पुराना पासवर्ड डाले बिना हम कार्ड ब्लॉक नहीं कर पा रहे हैं, कृपया अपना पुराना पासवर्ड बताएं "।

मैं हैरान रह गया। किसी निर्णय पर पहुँच ही नहीं पा रहा था। कॉल पर एक अंजान महिला, अकाउंट से की जा रही छेड़-छाड़, सी0वी0वी, पासवर्ड...कहीं मैं ठगी का शिकार तो नहीं हो रहा ? क्या करूँ, क्या ना करूँ...पासवर्ड तो याद है...बता दिया और उधर से कोई गड़बड़ हो गई तो...लेकिन ना बताया और जितनी देर में बैंक पहुंचा, उतनी देर में कोई बड़ा लेनदेन हो गया तो...इधर कुआं उधर खाई वाली बात हो गई थी...।

“ आप जल्दी से पुराना पासवर्ड दें, नहीं तो देर हो जाएगी ” - उधर से व्यग्रतापूर्वक कहा गया ।

“ जी पासवर्ड तो मुझे याद नहीं है लेकिन मेरी डायरी में लिखा हुआ है ” - कहते हुए अनुभाग की ओर लौटा ।

“ देखकर जल्दी से बताइये ”- उधर से आवाज़ आई ।

अनुभाग में समीर भाई बड़े बाबू से किसी फ़ाइल को लेकर बात कर रहे थे ।

मोबाइल को हथेली में इस तरह दबा कर कि मेरी आवाज़ फोन पर मौजूद महिला तक न चली जाए, मैंने समीर भाई को धीरे से आवाज़ दी, “ समीर भाई ”, मेरी आवाज़ में जैसे जहाँ भर का दर्द था ।

“ हाँ .. क्या हुआ ? ” - समीर भाई ने मुड़ते हुए कहा । मेरे चेहरे के हावभाव देखते ही वो समझ गए कि कुछ गड़बड़ है ।

समीर भाई ने यूं तो कोई दो साल पहले ही ऑफिस ज्वाईन किया है, पद में वरिष्ठ भी हैं, पर सहृदय होने के साथ-साथ वे सभी की मदद को हमेशा ही तत्पर रहते है । किसी भी तकनीकी समस्या के समाधान के लिए मैं हमेशा ही उनकी सहायता लेता रहता हूँ ।

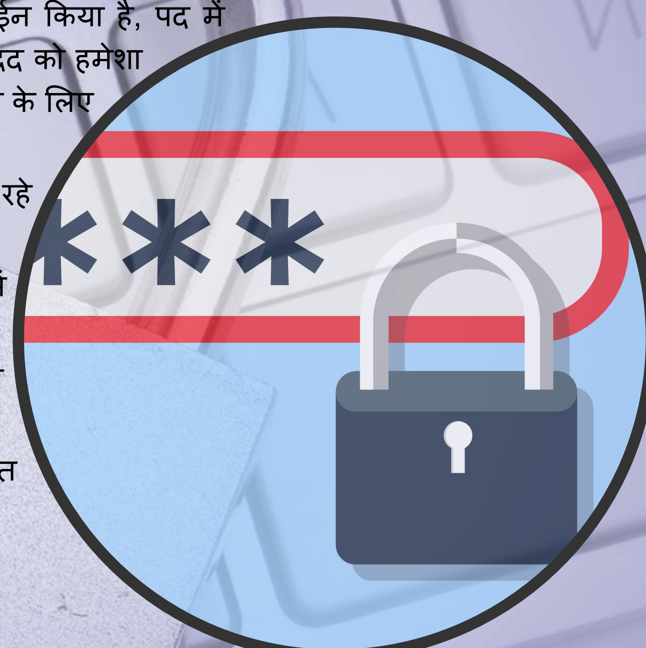

“ समीर भाई, बैंक से फोन है...मेरे एटीएम का पासवर्ड मांग रहे हैं ” - मैंने झिझकते हुए कहा ।

फोन पर हुई मेरी बातों के कुछ अंश अवश्य ही उनके कान में पड़े थे, तुरंत ही समझ गए कि क्या माजरा है ।

“ तुमने कुछ बताया तो नहीं ” - समीर भाई ने चिंतित होते हुए पूछा ।

मेरी तो जैसे जान ही अटकी हुई थी, समीर भाई की चिंतित मुद्रा देख समझ गया कि मैंने गड़बड़ कर दी है ।

“ कार्ड नंबर बता दिया है ” - मैंने कहा ।

“और क्या बताया? ” - समीर भाई ने फिर पूछा ।

“सी०वी०वी नंबर और नाम...” - मैंने कहा।

“ पासवर्ड तो नहीं बताया...” - मेरी बात को बीच में ही काटते हुये समीर भाई ने पूछा ।

“ नहीं ”।

समीर भाई ने आँख बंद कर धीरे से राहत की सांस ली, मुस्कराए...।

“ मोबाइल मुझे दो ” - उन्होने कहा।

मैंने मोबाइल अपने कान से लगा कर महिला को कहा,“ मुझे पासवर्ड नहीं मिल रहा है, लेकिन मेरे भाई को पता है, आप उनसे बात कर लीजिये ” - कहकर मैंने मोबाइल समीर भाई को दे दिया।

“ हैलो...बताइये ”- समीर भाई ने कहा।

उधर से फिर कार्ड संबंधी बात कही गई ।

“ आप किस ब्रांच से बोल रही हैं...बताएँगी? ” - समीर भाई ने मोबाइल का स्पीकर ऑन करते हुये कुछ कडक स्वर में

कहा ।

“ हम आपकी मदद करने का प्रयास कर रहे हैं और आप हमसे ही इनक्वायरी कर रहे हैं ” - उधर से गुस्सा होते हुए महिला ने कहा ।

“ मैडम ये सीबीआई ऑफिस है, हमें काफी दिनों से आप जैसे लोगों की शिकायत मिल रही थी, अभी आपको जो भी जानकारी दी गई है कार्ड के संबंध में वो गलत है, हम तो आपको कॉल पर उलझाए हुए थे कि आपकी लोकेशन ट्रेस की जा सके, हमारी टीम आपकी तत्काथित बैंक पहुँच गई है...आपका दिन शुभ हो ”- समीर भाई ने हँसते हुए कहा ।

कहते हैं चोर के पैर नहीं होते...समीर भाई की बात सुनते ही मोबाइल डिसकनैक्ट हो गया ।

समीर भाई ने मोबाइल मेरे हाथ में देते हुए मुस्करा कर कहा “ बच गए आज तुम, सही समय पर तुमने सही निर्णय लिया..., अब उसी नंबर पर कॉल करके देखो, कॉल रिसीव नहीं होगी । ”

मैंने उस नंबर को डायल किया, “ डायल किया गया नंबर अभी बंद है ” - उधर से रेकार्डेड आवाज़ गूंजी ।

अब तक मुझे समझ आ चुका था कि मैं ठगी का शिकार होते होते बचा हूँ । यूं तो हमेशा ही इस तरह के किस्से सुनने में आते रहते हैं, परंतु जिस तरह से अचानक ये घटनाक्रम मेरे साथ घटा, कुछ सोचने-समझने का मौका ही नहीं मिला। मैं समझ चुका था कि किस तरह लोग ऐसी ठगी का शिकार हो जाते हैं।

बड़े बाबू भी समझ गए थे कि मेरे साथ क्या हुआ है, समझाते हुए बोले, “ आजकल बहुत सचेत रहने की जरूरत है, तकनीकी ने जहाँ हमें अनेक सुविधाएं दी हैं - वहीं सावधानी ना बरतने पर इसकी बड़ी कीमत भी चुकानी पड़ सकती है । अच्छा हुआ अंत में तुमको अपनी भूल का एहसास हुआ और पासवर्ड बताने की अपेक्षा तुमने अपना मोबाइल समीर को दे दिया नहीं तो कुछ भी हो सकता था । बैंक की ओर से हमेशा ही सूचित किया जाता है कि बैंक कभी कॉल नहीं करती, अपना यूज़र नेम, पासवर्ड, ओटीपी, सीवीवी आदि कभी किसी को ना बताएं । ”

मैंने समीर भाई को धन्यवाद दिया। आज बहुत बड़ी गलती होते-होते बच गई थी ।

तभी मोबाइल की मैसेज टोन की आवाज़ आई, “ टिप टिप ” ...... अब क्या हुआ ?

बैंक की ओर से मैसेज था....!!!!! मैं डर गया, मेरी तो हिम्मत ही नहीं हो रही थी मैसेज देखने की....लगता है कि ठग ने अपना काम कर दिया । मैंने समीर भाई को मैसेज दिखाया ।

समीर भाई ने मोबाइल का मैसेज देखा और ज़ोर से बोले, “ बैंक से मैसेज है, - लिखा है - कार्ड नंबर, सीवीवी, पिन, ओटीपी किसी को न बताएं। बैंक कभी नहीं पूछता ।”

सुनकर सब हंस पड़े। मैं भी मुस्करा दिया। शाम को पूरे अनुभाग में मिठाई बांटी गई ।

आज जिंदगी भर के लिए एक बड़ा सबक़ मिला था - सतर्क रहें...सचेत रहें...बैंक कभी कॉल नहीं करता।

(सहकर्मी के साथ घटित सत्य घटना के आधार पर, गोपनीयता की दृष्टि से पात्रों के नाम बदल दिये गए हैं)

सोनार बांगला और इसका मुख पृष्ठ

श्रीमती रूणा बंधोपाध्याय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सोनार बांगला। हमारी हिन्दी पत्रिका का नाम। मन में पहला प्रश्न आता है कि यह नाम क्यों दिया गया है ? 'बांग्ला' इसलिए कि यह इस राज्य से प्रकाशित होती है। तो 'सोनार' क्यों ? बंगाल में ऐसा क्या है जिसके लिए इसकी तुलना 'सोना' अर्थात स्वर्ण के साथ की गई है। स्वर्ण एक मूल्यवान वस्तु है और काफी चमकदार होती है। बंगाल में विरासत, सुधार, साहित्य, संगीत, संस्कृति, आंदोलन सही मायने में विशिष्ट हैं । पाल एवं सेन राजवंशों से आरंभ, सुधार जैसे - बाल विवाह, 'सत्तीदाह' का उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह; बंकिमचन्द्र, शरतचन्द्र, रबिन्द्रनाथ टैगोर की महान लेखन-पटुता; प्रसिद्ध लोक गीत टप्पा, कीर्तन, भटियाली; उदयशंकर, पंडित रविशंकर जैसे सितारे, सभी अपने संबंधित क्षेत्र में महान हैं और उनके कार्य कालातीत हैं । सिपाही विद्रोह बंगाल से आरंभ हुआ । स्वतंत्रता सेनानी जैसे मंगल पांडे, खुदीराम बोस, बिनय, बादल, दिनेश, मातंगिनी हाजरा, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस हमारे स्वतंत्रता संघर्ष में कुछ जाने-पहचाने नाम हैं । उनका योगदान विशिष्ट है, इसलिए स्वर्ण से तुलना की गई है । सोनार बांग्ला की ये स्वर्णिम संताने हैं ।

इसके अतिरिक्त, बंगाल के त्यौहार अत्यंत संपन्न हैं । बंगाली नव-वर्ष, दुर्गापूजा, नवन्ना (बंगाल का फसल उत्सव), बसंत उत्सव, इत्यादि; तथापि, दुर्गापूजा पारंपरिक संस्कृति सहित सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्यौहार माना जाता है । यह त्यौहार मातृ-देवी अर्थात 'महिषासुर मर्दनी' अथवा भैंस-असुर वधिक की पूजा के लिए है । महिषासुर के विनाश हेतु देवी दूर्गा का सृजन किया गया था, जब समस्त देवता उसको नियंत्रित करने में असफल रहे। यह नारी ऊर्जा अथवा 'शक्ति' और दुष्ट शक्ति से संघर्ष का प्रतीक है । हमारा मुख-पृष्ठ 'मातृ-शक्ति' को एक शांत तथा संरक्षक के रूप में दर्शाता है । वह शांति, समृद्धि तथा 'धर्म' का निरूपण करती हैं । उनके हाथों का शंख पवित्रता, नीतिपरायणता तथा जागृत चेतना को दर्शाता है । देवी के हाथ में बांसुरी लैंगिक शक्ति संघर्ष को दर्शाती है । इसका वादन अधिकांशतः पुरूषों द्वारा किया जाता है और श्री कृष्ण इसके लिए प्रसिद्ध हैं । यह रीढ़ का भी प्रतीक है और सुराख चक्रों को दर्शाते हैं । जब एक देवी बांसुरी-वादन करती है, तब वह अपने परिवेश को उदात्त भावना से आलोकित करती है ।

अतः हमारे मुख-पृष्ठ पर मां दुर्गा पवित्र आत्मा और ज्ञानवर्धक शक्ति से युक्त महिला सशक्तिकरण का संदेश प्रतिपादित करती हैं । वह शांति एवं समरसता के प्रसार हेतु चेतन मन से युक्त एक संरक्षक माता हैं ।

शुचिता

मनोज कुमार मोवार
कल्याण अधिकारी

आज फेसबुक व आधार डेटा, हो गया है लीक।
विधार्थी चिल्ला रहे हैं, उनका पेपर भी है लीक॥

दफ़्तरों से फ़ाइल लीक, बैंकों से पैसा लीक।
हर जगह से लगता है, सच्चाई ने किया फ़्लीट॥

आम जनता सहमी हुई है, नहीं समझ पा रही यह ट्रिक।
सिर्फ बड़ी - बड़ी बातें होती, एक्शन होता नहीं क्विक॥

करोड़ों रूपए लेकर भागा, मोदी, माल्या और एकाधिक।
सोता रहा देश का प्रहरी, नहीं ली इतिहास से सीख॥

दुर्जनों के कदाचार से, नारी वर्ग हैं अति भयभीत।
आज एक महाप्रश्न खड़ा है, क्या हमारा चरित्र है लीक॥

राम-रहीम की इस पावन धरा पर, क्यों हो रहा यह कु-कृत्य।
अंधस्वार्थ के वशीभूत हो, मोह-माया में भुलाये सारे सुकृत्य॥

गीता-कुरान को ठुकरा कर, हमने चुनी विनाश की लीक।
बुद्धि-विवेक का त्याग कर, मन-मर्जी करके हुआ निर्भीक॥

प्रकृति को रौंदा हमने, मानवता को किया रक्तरंजित।
अतिशय भ्रष्ट आचरण कर, वसुधा को किया कलंकित॥

वक्त अभी शेष है, कर लें निज कर्मों को परिष्कृत।
वरना अंतिम वेला में, हम होंगे असहाय व व्यथित॥

आएं फिर ऐसा समाज बनाएँ, जहां रहें सभी निर्भीक।
शुचिता का प्रकाश फैलाएँ, बनें दिव्य-प्रेम का प्रतीक॥

यादें

तरुण कुमार गोस्वामी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कभी-कभी याद आती है, उस झील की,
जहाँ बचपन गुजारा ...

याद आता है, छलका देना कभी
पत्थर के चौकोर टुकड़े,
तो कभी कागज़ की कश्ती
एक किनारे से दूसरे किनारे की ओर।
आज जब तुम्हारी आँखों में देखता हूँ,
तो वही झील नज़र आती है,
पर यहाँ सिर्फ गहराई है
किनारा नहीं !!!!

अक्सर याद आते हैं, वो आँखमिचौनी के खेल,
बचपन में खेला करते थे ...

दोस्तों को ढूंढ निकालने में था जो मज़ा,
वही जीत थी मेरी।
आज छुप जाने को मन करता है
फिर उन्हीं वादियों, यादों में
कभी तो ढूंढ निकालो तुम
आख़िर मुझे भी मुझमें होने का
एहसास हो कभी !!!!

उन दस्तूरों की याद आती है, घर से निकलते,
जब माँ कहती थी..

"जा रहे हैं" नहीं
"आ रहे हैं" बोलो
आज जब अलविदा कहा तुमने
वही जज़्बात दिल में फिर से गूंज उठा
हाथ मैंने भी उठाया विदा करने को, पर मन ही मन कहा
"जा रहे हैं" नहीं
"आ रहे हैं " बोलो !!!!

सावन के रंग

ओलिभ बारा
पर्यवेक्षक

नीले आसमाँ की गोद में
घिर आये जब घनघोर घटा
मन आह्लादित हो जाये
देख सावन की छटा।

निकले बदली पे चाँद नया
लगे धरती का रूप सलोना
पत्तियाँ पेड़ों की हरी-भरी
मानो वसुधा है ओढ़े चादर हरी।

एहसास दिलाए नवजीवन का
छप-छप किलोरें पानी की
याद दिलाए बचपन की
कश्ती वो कागज की।

नदियों में उफान पानी का
उनमें गर्जन लहरों का
लगे जैसे तर्जन सिंह का
दूर कहीं माँझी के गीत
लगे मन को मनोहर अति।

खेत हरे-भरे सभी के
पहचान मेहनत कृषक की
वन में मोरनी मोहक नृत्य से
मन को भरे सतरंगों से
हो जाये नवस्फूर्ति का संचार
पाकर वर्षा की बूंदों का आधार
मिले तन-मन को
शीतलता व स्वच्छता का उपहार।

एक अनजानी-सी चाहत लिये
तकता चपल चकोर
समझ चाँद को अपना चितचोर

बावली हो सजनी
फिरे पिया मिलन को हो व्याकुल
निहारे रस्ता हो आकुल।

वो सावन के झूले में
खिलखिलाना अल्हड़ तरुणी का
जैसे हो कलरव उन्मुक्त पंछी का।

टिप-टिप ध्वनि वर्षा की
खन-खन पाजेब गोरी की
याद दिलाये हंसी ठिठोलियाँ
यमुना-तीरे
कन्हैया संग गोपी-सखियों की।

जूही-चमेली-पलास की महक से
आए बगिया में बहार
लाए खुशियों की फुहार
आए लेकर प्रेम का संदेश
मिटाए परस्पर आक्रोश
बोले, आओ मिल जाएँ ऐसे
मिले बूंद-बूंद
अथाह सागर में जैसे।

सोचता हूँ मैं

अरुण विकास
कनिष्ठ अनुवादक

सोचता हूँ मैं
कविता रच डालूँ
प्रथम कवि से प्रेरणा ले
शब्दों को सजा डालूँ।

भाव-बोध कहाँ सजग हैं मेरे
प्रयत्न प्रवाह जो जारी है
कविता एक गढ़ने को
भाव-बयार ललकारी है।

शब्द संसार में गोता लगा
खोज अनवरत जारी है
कविता अपने रूप को
बस अब धारण करने वाली है।

मोहित करते शब्द अनेक
म्यान में सजने वाले हैं
बनकर एक उन्मुक्त कविता
अब बस लहराने वाली है।

कवि मन उन्मत हो गया
कविता रच डालने को
शब्द व्याकुल हो गए
उसमे ढल जाने को।

सोलह शृंगार को व्याकुल कविता
कवि का दामन थाम लिया
हँसी ठिठोली में कवि ने
यह कविता रच लिया।

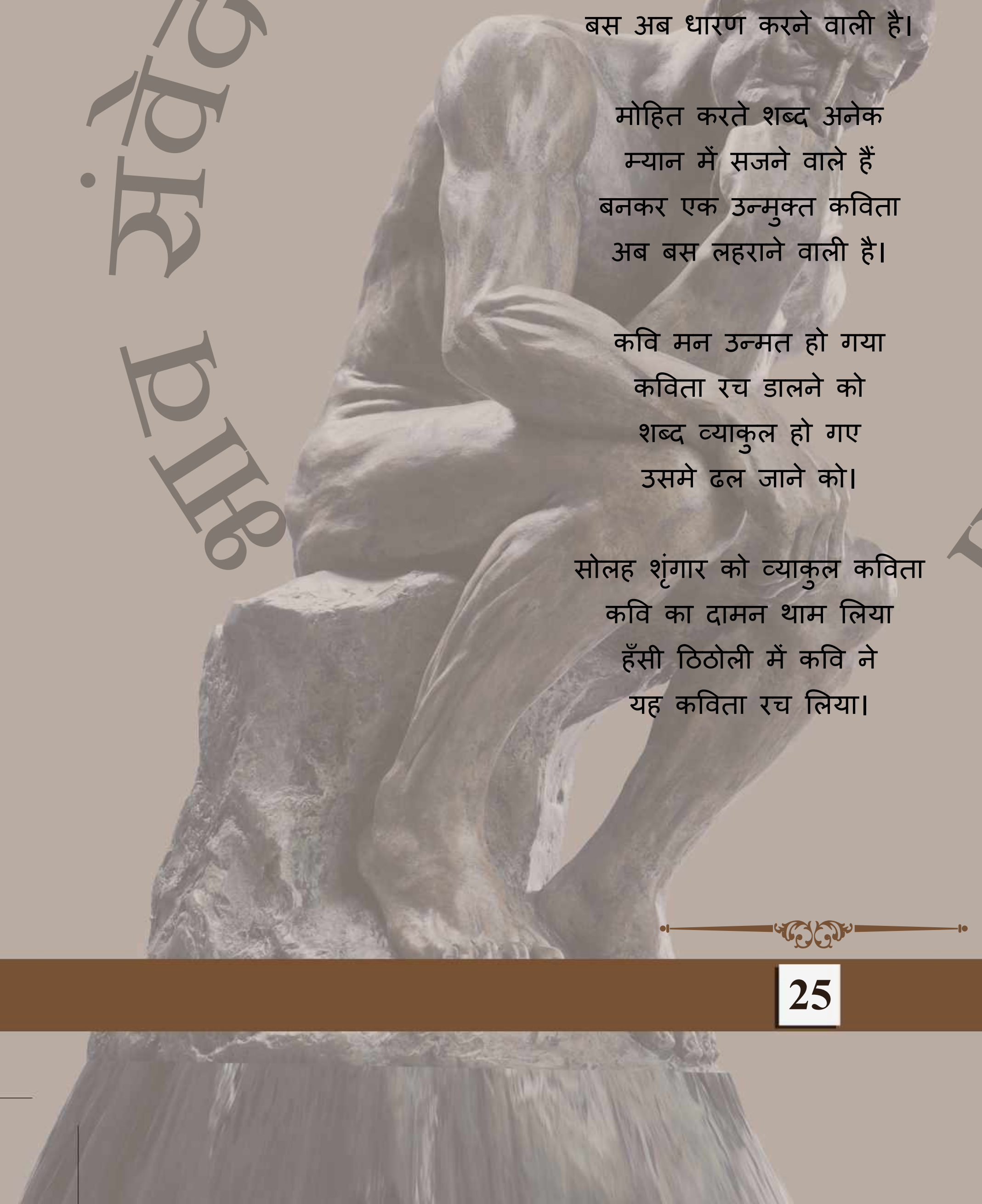

पापा

प्रभात कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

माँ की महिमा सब ही जाने,
क्या हैं पापा कोई न जाने।

माँ की ममता सब ही जाने,
त्याग पापा का कोई न जाने।

माँ ही जीवन है सब ये जाने,
जीवन का आधार हैं पापा कोई न जाने ।

माँ के कदमों में जन्नत है,
बच्चों का संसार हैं पापा कोई न जाने ।

सोता हूँ तो माँ की लोरियां याद आती हैं,
जब कभी गिर पड़ूँ तो पापा की अंगुलियाँ।

ये सही है कि माँ हमारी जन्मदाता है,
पर पापा हमारे अन्नदाता हैं।

माँ है तो सारी खुशियाँ हैं,
पापा हैं तो सारे सपने हैं।

माँ की ममता तो सब देखे ।
पापा का छिपा प्यार कोई न देखे।

माँ की महिमा सब ही जाने,
क्या हैं पापा कोई न जाने।

बेटी के पिता का आह्वान

प्रशांत कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

मैं विरोध करता हूं बेटी को लक्ष्मी कहे जाने का
जन्मी तो मिलने वाले लंबी सांसें भरते बोले -
“चलो लक्ष्मी आई है घर में, लड़कियां भी भला किसी से कम हैं आजकल”
मैं संशय में था - “ये उद्‌गार बधाई हैं या सांत्वना ?”
नवजात पुत्र को तो न नारायण की संज्ञा दी जाती है
न महादेव की
रहने दिया जाता है उसको पुत्र-लड़का-पुरुष ही
तो फिर कोमल पंखुरी-सी सद्‌यजात बेटी पर
इस देवीत्व का बोझ क्यों ?
नारायण-हीन पुरुषों के समाज में इस लक्ष्मीत्व को फिर
जीवन भर ढोती रहती है बेटी
पैदा होते ही लक्ष्मी बनाई जाती है

इसलिए ढेरों शकुन-अपशकुन का केंद्र बनती है
पिता के लिए स्नेह से अधिक उसके सम्मान की कसौटी
और चिंता का कारण बनती है
इसलिए ही ससुराल में उसे बेटी मानने के स्थान पर
मान लिया जाता है - जितेंद्र, इच्छाहीन, अनुशासनबद्ध, सर्वगुणसंपन्न,
व्यवहारकुशल, अलादीन का चिराग
और मूक गाय
ऐसी कर्मठ ईमानदार गाय जो संभवत: अपने आधे जीवन तक
अपने घर के बारे में भी पूरे विश्वास से कुछ नहीं कह पाती है
पिता के घर में सुनती है कि वह पराए घर की धरोहर है
ससुराल में कहा जाता है कि अपने मायके की है
मायके-ससुराल के मध्य लटकती बेटी की यह त्रिशंकु स्थिति
पैदा होते ही लक्ष्मी बन जाने के कारण ही तो होती है

मैं चाहता हूं कि बेटी को अनचाही जिम्मेदारी अथवा चिंता के पर्यायवाची के रूप
में देखा जाना बंद हो
मानवीय जीवन में थोपे हुए 'लक्ष्मीपने' और आदर्श वहन की हठधर्मी बाध्यता
से वह मुक्त हो
मात्र पढ़ाने व अधिकारों का ज्ञान देने से नहीं होती बेटी सशक्त
अपितु संस्कृति और संस्कार के उस खंड की पुनर्समीक्षा होनी चाहिए
जो पैदा होते ही बेटी को बना देता है देवी

और फिर बेटी जीवन भर ढोती रहती है
अपने कृतघ्न याचकों की अंतहीन मांगो-लालचों का बोझ
कि आजीवन बेटी संभालती है दो घरों को
लेकिन एक घर का सुख भी नहीं होता उसके भाग्य में

मैं एक बेटी का पिता हूं
और सब बेटियों के पिताओं से यह आह्वान करता हूं
कि आओ आजाद करें बेटियों को पर इन्हें छोड़े नहीं
आओ संजोएं बेटियों को पर इन्हें बांधे नहीं
आओ अग्रसर करें बेटियों को इनके स्वप्न पथ पर
पर इन्हें भूले नहीं

कि उषा-सी पवित्र, सुंदर स्मृतियों-सी मृदुल बेटियां
पंछियों की तरह लौट कर आती हैं
बेटियां बेटी से डॉक्टर-इंजीनियर-अधिकारी-कलाकार-टीचर
और खुद मां बन जाती हैं
लेकिन कभी अपने रिश्तों पर अपना उपकार नहीं थोपती
कि बेटियां ताउम्र अपने घरों, अपनी जड़ों को नहीं भूलती

मन का भंवरा

श्री ओम प्रकाश चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

थोड़े-थोड़े से जोड़ा हूँ
थोड़े में ही सबकुछ है।
थोड़ा गम हैं थोड़ी खुशियाँ
थोड़े में ही जीवन है।
बेचैन रहा हूँ पाने को
जितना मैं न रख सकूँ।
नित सबेरे उठता
कुछ नये सपने लिए।
घर है खाली मन भी खाली
कुछ पाने की चाह लिए।
जो है उससे तृप्त नहीं
कुछ और लालसा है पाने की।
आधा जीवन गुजर चुका है
फिर भी अभी अधूरा हूँ।
आकुल मन है मेरा
और अधिक जुटाने की।
चहुं ओर हाहाकार मची है
हिंसा और लूटपाट मची है।
धोखा और फरेबी का आलम सर्वत्र
ईमानदारी पर धूल पड़ी है।
क्या लाया था क्या ले जाऊँगा
इस सोच में मन पड़ा है।
खाली हाथ आया था खाली हाथ ही जाऊंगा
इस बात पर सत्य अड़ा है।

वीरों की शहादत

श्री मनोज कुमार मोवार
कल्याण अधिकारी

आज सीमा पर समर अग्नि क्यों धधक रही है?
क्या किसी आततायी ने गुलशन में आग लगाई है?
जिधर देखो उधर जालिमों ने, खून खराबा मचा रखा है,
अति जघन्य करतूत से, जन्नत को जहन्नुम बना रखा है।
कभी उरी, कभी पठानकोट, छिपकर वो घात लगाते हैं,
हमारे बेकसूर जवानों का, निशिदिन रक्त बहाते हैं।
निरीह-निर्दोष की हत्या से, सांसे थम-सी जाती हैं,
अनाथ शिशुओं के क्रन्दन से, आंखे गीली हो जाती हैं।
पवित्र हिमालय की वादियों में, कैसा खूनी मंजर सजा है?
गाँधी-बुद्ध-महावीर के देश में, यह कैसा कोहराम मचा है?
अब ये सहन नहीं होगा, कह दे कोई उन आतंकियों को,
सवा सौ करोड़ मिलकर जब, खदेड़ेंगें उन कातिलों को।
संधि-वार्ता का समय शेष, अब माकूल जवाब हम भी देंगे,
अपने वीरों की शहादत को, यों ही नहीं व्यर्थ जाने देंगे।
रक्त रंजित इस वसुधा को, फिर से कलंकित नहीं होने देंगे,
अपनी फौलादी ताकतों से, दुष्टों का समूल नाश कर देंगे।
धर्म की अफीम पी, मदान्ध हो, वो खुलेआम बन्दूकें लहराता है,
युवाओं से पत्थरबाजी करा, हमारी अस्मिता पर चोट करवाता है।
रे मूर्ख, पापी, क्यों पथभ्रष्ट होकर, भारत से द्रोह करता है,
अन्धाधुन्ध मार-काट कर, क्यों काल को ललकारता है?
रावण-कंस-गजनी-गोरी, सभी जुल्मियों को हमने फटकारा है,
भले तू कर ले, जी भर दहशतगर्दी, आखिर जीत हमारी है।
अब बहुत हुआ, नफरत की दीवार तोड़, तुम्हें गले लगाते हैं,
मेरे भाई, हिंसा छोड़, तहे दिल से तुम्हे अपनाते हैं।
अमन-चैन का अंतिम अवसर, तिरंगे का सम्मान करो,
हजारों वीरों को हमने गँवाया, अब न इसका अपमान करो।
हमारा देश अखण्ड रहे, एकता की मशाल जलाएंगे,
हे वीर, तेरी शहादत को हम कभी न भूल पाएंगे।।

ऑडिटर बाबू

प्रभात कुमार
स.लेप.अ.

ऑडिटर बाबू ! तेरी लीला अपरंपार
लेखापरीक्षा को जब तुम जाते,
सब पर चढ़ जाता काम का बुख़ार।
नित नए प्रश्न है करता
खुली चुनौतियों से नहीं डरता।
बिन-बुलाये मेहमान-सा आता
बिन चोट दिये न जाता।
बात-बात में गलतियाँ निकालता
अपनी शंका से उलझन में डालता।
गर्मी, बरसात या फिर हो सर्दी
तुम पर नहीं चलती, किसी की मर्जी।
जहाँ भी मिले तुम्हें काम फ़र्जी
सुनता नहीं किसी की अर्जी।
दल में आता, किसी को न भाता
फिर भी तुझको करता सलाम।
कलम तेरी जैसे-दो धारी तलवार
ओ! परवरदिगार जिसका जाए न खाली वार
ऑडिटर बाबू! तेरी लीला अपरंपार।

स्वच्छ भारत : सपना या हकीकत ?

श्री मनोज कुमार मोवार
कल्याण अधिकारी

हमारे देश में स्वच्छता के नाम पर आए दिन बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, नारे लिखे जाते हैं, सेमिनार आयोजित किए जाते हैं और गली-मुहल्लों को साफ रखने के लिए प्रति वर्ष 2 अक्तूबर को स्वच्छ भारत अभियान चलाया जाता है। फिर भी देखा जाता है कि अधिकांश शहरों एवं गाँवो की स्थिति साफ-सफाई के मामले में अत्यंत दयनीय है। जगह-जगह कूड़े-कचरे का ढेर, आस-पास की नालियों से आती दुर्गन्ध एवं जहाँ-तहाँ बिखरे हुए रद्दी कागज, ठोंगे, रैपर्स, बोतलें, पॉलिथीन, इत्यादि आज अधिकांश शहरों एवं कस्बों का आम दृश्य हो गया है। देश के कुछ ही शहर एवं गाँव ऐसे हैं जो साफ सुथरे हैं जैसे - सूरत, चंडीगढ़, इन्दौर, भोपाल, विशाखापत्तनम, पुडुचेरी, मैसूर, मन्नार, ऊटी, गैंगटोक, इत्यादि। बाकि जगहों पर गन्दगी का अम्बार लगा हुआ है । एक तरफ दिनोंदिन शहरीकरण के कारण प्रदूषण का स्तर बढ़ता जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ उचित साफ-सफाई के अभाव में गली-मुहल्लों की स्थिति नाटकीय होती जा रही है ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक ताजा सर्वेक्षण (मई 2018) के अनुसार दुनिया के 15 सर्वाधिक प्रदूषित शहरों की सूची में भारत के ही 14 शहर शामिल हैं । कानपुर को दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषित शहर का दर्जा मिला है। बाकी तेरह प्रदूषित शहरों के नाम जो क्रमशः दो से 14वें स्थान पर हैं वो इस प्रकार हैं - फरीदाबाद, वाराणसी, गया, पटना, दिल्ली, लखनऊ, आगरा, मुजफ्फरपुर, श्रीनगर, गुड़गाँव, जयपुर, पटियाला और जोधपुर। सूची में पन्द्रहवें स्थान पर कुवैत का 'अली सुबह अल-सलेम' शहर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट भारत सरकार व सुधी नागरिकों के लिए गहन चिंता का विषय है, जिनके 14 शहरों को सबसे अधिक प्रदूषित शहरों के खिताब से नवाजा गया है।

वहीं दूसरी ओर दुनिया के सबसे साफ-सुथरे एवं स्वच्छ शहरों जैसे - लक्जमबर्ग, ज्यूरिख, एडिलेड, सिंगापुर, इत्यादि की ओर जब हमारा ध्यान जाता है, तब हमें अपनी कमी का एहसास होता है। हमारा सिर शर्म से झुक जाता है कि 130 करोड़ की आबादी वाला देश जो भरपूर प्राकृतिक संसाधनों, खनिज संपदा, वन, जंगल, पहाड़, नदी, उपजाऊ भूमि, इत्यादि से युक्त है, वहाँ सफाई के प्रति इतनी उदासीनता क्यों है? क्या भारतीय स्वच्छता को सही अर्थों में गंभीरतापूर्वक नहीं लेते हैं?

यह सत्य है कि भौगोलिक विविधताओं से भरे इस विशाल देश में पूर्ण स्वच्छता को कायम रखना एक बड़ी चुनौती है, फिर भी प्रदूषण के बढ़ते स्तर को देखते हुए हमारे देश में स्वच्छता के प्रति सही अर्थों में एक आन्दोलन की जरूरत है। यह आन्दोलन मात्र सरकारी कार्यालयों एवं संस्थानों तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि हर-एक नागरिक को इसमें आत्मबोध के साथ शामिल होना चाहिए। हालांकि 2 अक्टूबर 2014 से भारत सरकार द्वारा स्वच्छ भारत मिशन चलाया जा रहा है, जिसका मूल उद्देश्य गलियों व सड़कों की साफ-सफाई के साथ-साथ बृहत स्तर पर शौचालय के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करना है। इसके अन्तर्गत, 2 अक्टूबर 2019 यानि महात्मा गाँधी के जन्म की 150वीं वर्षगाँठ तक देश में 1.2 करोड़ शौचालय का निर्माण करके 'खुले में शौच मुक्त भारत (ओडीएफ)' को हासिल करने का लक्ष्य है। स्वच्छता मिशन के लागू होने के तकरीबन चार वर्ष बाद भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं आया है। हाँ, कुछ सार्वजनिक संस्थान, सरकारी

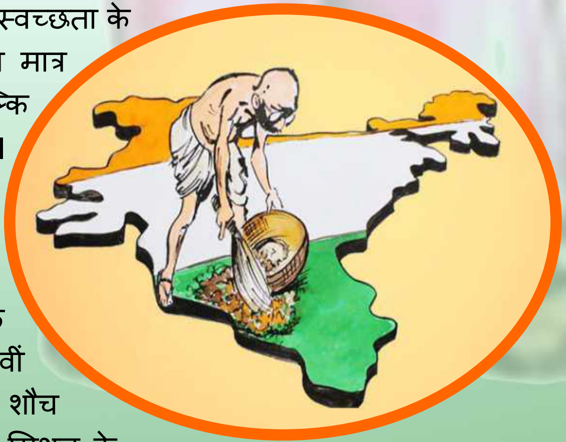

कार्यालय, रेलवे परिसर, महत्वपूर्ण राजमार्ग, इत्यादि पहले से ज्यादा सुन्दर व स्वच्छ हो गए हैं। स्वच्छता मिशन के चलते ही अब तक ग्यारह राज्य खुले में शौच की प्रथा से मुक्त हो गए हैं । फिर भी प्रदूषण व गंदगी की विशाल मात्रा देखते हुए यह कोरी कल्पना होगी की भारत मात्र एक वर्ष बाद यानि अक्तूबर 2019 तक एक स्वच्छ राष्ट्र की गिनती में शामिल हो जाएगा।

यह एक कड़वा सच है कि भारतीय साफ-सफाई को अपने घरों, रसोईघरों एवं पूजा घरों तक ही सीमित रखते है। बाहरी परिवेश व आस-पास की सफाई से उन्हें कोई लेना देना नहीं है। जीवन स्तर में सुधार होने के साथ-साथ हम भारतीयों में खुद साफ-सफाई करने के प्रति संकोच एवं आलस्य की भावना आ गई है। उच्च वर्ग एवं उच्च मध्यमवर्ग में यह प्रवृति ज्यादा देखने को मिलती है, जहाँ खुद अपने हाथों से घर में भी साफ-सफाई करना अपने सम्मान के खिलाफ समझते हैं, बाहर सफाई करने की बात तो छोड़ ही दीजिए। वे 2 अक्तूबर के दिन झाड़ू हाथ में लिए आस-पास की सफाई सिर्फ फोटो खिंचवाने या समाचार का हिस्सा बनने के लिए करते हैं। मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग जीविका अर्जन में व्यस्त रहने एवं समयाभाव के कारण सफाई को नकारता है। इस वजह से दूसरों की नजरें बचाकर सड़कों, गलियों, झाड़ियों या नदी-नहरों में घर के कूड़े-कचरे को पॉलिथीन में बाँध कर फेंकने का गलत व्यवहार बढ़ रहा है। हम शारीरिक श्रम को हेय समझते हैं और साफ-सफाई का जिम्मा नौकर-चाकर या सफाईकर्मी पर छोड़ देते हैं। जब तक सफाई अभियान में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी नहीं होती है तब तक इस विशाल देश में पूर्ण स्वच्छता को हासिल करना असंभव है, भले ही सरकार एवं सरकारी संस्थान इसके लिए दिन-रात प्रयत्नरत रहे एवं अपने संसाधनों का कितना ही उपयोग क्यों न करें। वस्तुतः हम भारतीय महात्मा गाँधी के उन आदर्शों को भूलते जा रहे हैं जिन्होंने व्यक्तिगत श्रम के महत्व को अपनाने की सलाह दी थी। आज हम भले ही सूचना क्रान्ति के दौर से गुजर रहे हैं लेकिन स्वच्छता के प्रति हमारी सोच में समयानुकूल बदलाव नहीं आया है। अधिकतर नागरिक स्वच्छता बहाली के लिए सरकार एवं इसकी संस्थाओं से अपेक्षा रखते हैं। अगर सही ढंग से विचार किया जाए तो भारत में गन्दगी के दो-तीन कारण ही मुख्य हैं जिसकी वजह से हमारे शहरों एवं मुहल्लों की स्थिति नर्क-तुल्य बनी हुई है, जो निम्नलिखित हैं :-

1. दण्ड का अभावः- सार्वजनिक जगहों पर गंदगी फैलाने वालों पर हमारे देश में जुर्माना लगाने एवं मौके पर दण्ड देने की व्यवस्था का पूर्णतया अभाव है। इस वजह से कुछ ही शहरों या कस्बों को छोड़कर, कोई भी, कहीं भी, चाहे वह राष्ट्रीय राजमार्ग हो, राज्यपथ हो या आम सड़क, पार्क, मैदान या खुला क्षेत्र हो, कूड़ा व कचरा फेंकने या किसी तरह की गंदगी फैलाने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र है। वहीं विश्व के कतिपय स्वच्छ देशों (जैसे- सिंगापुर, लंदन) में ऐसा करने वालों पर कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान है। दण्ड के अभाव में अधिकांश नागरिक जहाँ-तहाँ गंदगी फैलाने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते हैं। यह समस्या जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ बढ़ती जा रही है। सरकारी मशीनरी यथा - नगर निगम, नगरपालिका, पंचायत आदि अपने सीमित संसाधनों के कारण कूड़े का निपटान शीघ्रता से नहीं कर पाते हैं, जिससे कूड़ा-कचरा बिखर कर नाली एवं ड्रेनेज प्रणाली को बाधित करता है। अतः सरकार को इस दिशा में एक सख्त एवं प्रभावी कानून बनाने की जरूरत है जिसे लागू करने में किसी प्रकार की राजनीतिक व सामाजिक अड़चन नहीं आए। केन्द्र सरकार द्वारा यथाशीघ्र पूरे देश के लिए एक स्पष्ट एवं सरल कानून बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने वालों पर कड़े आर्थिक दण्ड लगाने की

नितान्त आवश्यकता है। इसमें किसी प्रकार का निहित स्वार्थ एवं राजनीतिक दाँवपेच का स्थान नहीं होना चाहिए। अन्यथा भारत जैसे जनसंख्या बहुल देश में स्वतंत्रता के 70 वर्ष बाद भी प्रकृति की रक्षा करना व स्वच्छता बहाल रखना कठिन हो जाएगा।

2. उचित संग्रहण एवं पुनर्चक्रन का अभावः- उचित संग्रहण के अभाव में कूड़े का ढेर जहाँ-तहाँ जमा होकर वातावरण को दूषित करता है। बढ़ती आबादी के कारण घरेलू व व्यावसायिक कूड़े-कचरे का उत्पादन तीव्र गति से हो रहा है, लेकिन इसके अनुपात में उचित संग्रहण एवं वैज्ञानिक तरीके से पुनःचक्रण (रिसाइक्लिंग) कर इसे निपटाने का अभाव है। रद्दी कागज, पुराने अखबार एवं कागज से बने पैकेट की रिसाइक्लिंग कर ज्यादा से ज्यादा पेड़ों को काटने से बचाया जा सकता है। वहीं कचरा निस्तारण में घरों से निकले जैविक अवशिष्ट को जैविक खाद व मिथेन गैस में परिवर्तित कर लाभ उठाया जा सकता है। आज से 20-30 वर्ष पहले देश में जैविक अवशिष्ट की उत्पति ज्यादा होती थी, जो धरती द्वारा आत्मसात कर लिया जाता था। जीवन स्तर में सुधार एवं आधुनिकीकरण के कारण घरेलू कूड़े-कचरे में कृत्रिम अपशिष्ट जैसे प्लास्टिक, रसायन, हानिकारक रंग, इत्यादि की मात्रा बढ़ने लगी है। पहले चाय और दही के लिए मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल होता था एवं सामान लाने-ले जाने के लिए जूट बैग का प्रयोग किया जाता था। अब स्थिति बिलकुल बदल गई है। खाने पीने की चीजों से लेकर मनोरंजन व प्रसाधन के सामान प्लास्टिक की रंग-बिरंगी थैलियों या कैरी बैग में आते हैं। इस्तेमाल के बाद प्लास्टिक के बैग असावधानीपूर्वक जहाँ-तहाँ फेंक दिए जाते हैं। इस वजह से प्लास्टिक के अत्यधिक बढ़ते उपयोग ने समग्र पारिस्थितिकी तंत्र को बिगाड़ दिया है क्योंकि प्लास्टिक आसानी से मिट्टी में नहीं घुलता है एवं इसको पूरी तरह से खत्म करने में प्रकृति अक्षम है। इस प्लास्टिक कचरे से नालियाँ बंद हो जाती हैं, धरती की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है, भूगर्भीये जल प्रदूषित हो जाता है एवं रंगीन प्लास्टिक थैलियों से कैंसर जैसे असाध्य रोगों की संभावना बढ़ जाती है। जहाँ-तहाँ बिखरे प्लास्टिक कचरे को खाने से लाखों पशुओं की अकाल मौत हो जाती है। अतः हमें प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग, खासकर 20 माइक्रोन से नीचे वाले प्लास्टिक पर यथाशीघ्र प्रतिबंध लगाना चाहिए। कई यूरोपीय देशों जैसे - फ्रांस, इटली आदि में प्लास्टिक के बने कप, प्लेट, चम्मच, इत्यादि पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया गया है। हमारे देश में महाराष्ट्र सरकार द्वारा विगत दिनों प्लास्टिक पर लगाया गया प्रतिबंध एक प्रशंसनीय कदम है।

3. अशिक्षा व गरीबी के साथ नागरिक बोध का अभावः- जिस देश की आधी से अधिक जनसंख्या अशिक्षा व गरीबी में जी रही हो, उससे स्वच्छ परिवेश की आशा करना उचित नहीं है। ये अशिक्षित व गरीब वर्ग के लोग दिनभर दैनिक जीवन की आवश्यकता पूर्ण करने में ही लगे रहते हैं। उनके जीवन में स्वच्छता प्राथमिकता की वस्तु नहीं है। जीवन स्तर में सुधार एवं शिक्षा के प्रचार-प्रसार द्वारा ही स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। यह समुदाय अवशेष (बट), पानमसाला-गुटखा के पाउच, खाने पीने के रैपर्स एवं जल की खाली बोतलें जहाँ-तहाँ फेंकते हैं। यह भारतीयों में नागरिक बोध के अभाव को दर्शाता है। साथ ही ऐसा गैर

जिम्मेदाराना काम प्रकृति व आने वाली पीढ़ी के लिए खतरे की निशानी है। किसी भी देश की ताकत उसकी युवा शक्ति में निहित होती है। देश के भविष्य को निखारने वाले उसके युवा व बच्चे हैं जिनके कंधों पर भविष्य को संवारने की विशेष जिम्मेदारी होती है। अतः हमें ऐसी शिक्षा एवं रोजगार परक व्यवस्था को बढ़ावा देना होगा जिसमें स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं स्वच्छता को अहमियत मिले एवं हमारी युवा शक्ति इसे अपनाने के लिए स्वप्रेरित हो। सरकारी एवं प्राइवेट कार्यालयों में भी स्वच्छता एवं साफ-सफाई पर सिर्फ व्याख्यान एवं सेमिनार ही न आयोजित हों, वरन सप्ताह में किसी भी एक दिन अधिकारी व कर्मचारी मिलकर साफ-सफाई के लिए मुहिम चलाएँ। इससे राष्ट्रीयता की भावना भी विकसित होगी एवं स्वच्छता आन्दोलन जोर-शोर से फैलेगा।

उपर्युक्त तीन मुख्य कारणों को हमारे प्रशासकों एवं नीति निर्धारकों द्वारा भली प्रकार विश्लेषित कर गंदगी के खिलाफ एक स्पष्ट एवं प्रभावी कदम उठाने की जरूरत है। महानगरों एवं बड़े शहरों में स्वच्छता बहाली के लिए पुलिस प्रशासन एवं स्थानीय निकायों (नगरनिगम, नगरपालिका) को अधिक उत्तरदायित्व दिए जाने की आवश्यकता हैं एवं संयुक्त रूप से कार्य करने की आवश्यकता है जिससे यत्र-तत्र कूड़ा-कचरा फेंकने वालों पर कड़ी नजर रखी जा सके एवं आवश्यकतानुसार उनको दंडित किया जा सकें। घरेलू व व्यावसायिक कूड़े-कचरे का संग्रहण करने के लिए निश्चित दूरी पर शहरों एवं गाँवों में कूड़ा घर (बन्द वैट) का निर्माण एवं निश्चित समय पर देखभाल एवं खाली करने की व्यवस्था को कायम रखने की अति आवश्यकता है। कूड़ा घर दो भागों में चिह्नित एवं विभक्त होना चाहिए जिससे जैव अवशिष्ट (बायोडिग्रेडेबल) एवं अजैव अवशिष्ट (नन बायोडिग्रेडेबल) निश्चित कक्षों में रखे जायें तथा उसका पुनर्चक्रण कर कूड़े-कचरे की मात्रा को कम किया जाए एवं लाभकारी उत्पाद बनाये जा सके जैसे - जैविक खाद, प्रकाश एवं इंधन के लिए मिथेन गैस, कूड़े कचरे से ऊर्जा (वेस्ट टू एनर्जी) की प्राप्ति, इत्यादि। लेकिन इस दिशा में वांछित सफलता तभी मिलेगी जब आम नागरिक की वास्तविक भागीदारी एवं सहयोग प्राप्त हो। यह हमारे विवेक एवं मानसिकता पर निर्भर करता है कि हम पर्यावरण के लिए कितना सचेत हो सकते हैं।

अतः आइये, हम अपने शहरों, मुहल्लों एवं गलियों को साफ-सुथरा एवं स्वच्छ रखने के लिए प्रतिदिन यह संकल्प लें कि हम साफ सफाई के प्रति सतत जागरूक रहेंगे एवं प्रतिदिन कम से कम दस मिनट का समय निकालकर खुद आस-पास की सफाई करेंगे। यह प्रकृति, पर्यावरण एवं धरती के लिए सच्ची सेवा होगी। ऐसा सामूहिक संकल्प (जो कर्तव्य रूप में परिणत हो) ही भारत जैसे विशाल देश में पूर्ण स्वच्छता की धारणा को साकार कर सकता है। अन्यथा, हमारी अकर्मण्यता की वजह से दुनिया की नजरों में भारत व इसके अधिकांश शहर गंदगी का प्रतीक बन कर रह जाएँगें।

प्रदूषण मुक्त भारत - कैसे बनेगा

उत्पल चटर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आपको यह जानकार हैरानी होगी कि यूरोपीय देशों की तुलना में भारत में धूम्रपान ना करने वाले लोगों में 30% प्रतिशत ज्यादा लोग फेफड़ों की बीमारी से ग्रसित हैं। मगर इसका कारण क्या है? जाहिर है कि इसका प्रमुख कारण है "वायु की खराब गुणवत्ता" ।

भारत में "वायु की खराब गुणवत्ता" के सबसे प्रमुख कारण निम्न हैं -

i) वाहनों से दूषित उत्सर्जन
ii) औद्योगिक उत्सर्जन
iii) रास्तों में वाहनों का अतिक्रमण
iv) कच्चे तेल का उपयोग
v) मिलावटी तेल का उपयोग

भारत की राष्ट्रीय स्वास्थय प्रोफाईल 2015 के अनुसार विगत 15 वर्षों में देश में वायु प्रदुषण में घातक वृद्धि हुई है। यह माना जाता है कि दिल्ली शहर के बच्चे स्वच्छ वायु का उपयोग नहीं कर पाते हैं। देश के और बहुत से शहरों का हाल लगभग ऐसा ही है। इसका भी प्रधान कारण है- "वायु की गुणवत्ता का बहुत ही बुरा हाल"।

यह आवश्यक है कि प्रदूषण को नियंत्रित तथा कम करने की दिशा में तुरन्त कदम उठाने चाहिए। साथ ही साथ आम नागरिकों को भी 'देश की वायु' को बचाने के लिए, अधिक से अधिक जागरूक होना बहुत जरूरी है।

अब वक्त है कुछ ऐसे अत्यंत जरूरी कदम उठाने का- जैसे

- औद्योगिक उत्सर्जन द्वारा प्रदूषण कम करने हेतु कम प्रदूषण वाले कच्चे माल का उपयोग।
- पेट्रोल और खासकर डीजल को ज्यादा से ज्यादा सी0एन0जी में परिवर्तित करना।
- प्रदूषण को कम करने के लिए औद्योगिक क्षेत्र में लम्बी चिमनी लगाई जा

सकती है। प्रदूषण जितना ऊपर रहे उतना ही अच्छा है।

- कभी-कभी प्रदूषकों का सोर्स से नियंत्रण मुश्किल हो जाता है। इसके लिए प्रक्रिया नियंत्रण उपकरण का उपयोग किया जा सकता है।
- सबसे महत्वपूर्ण है - पेड़-पोधों, वृक्षों की संख्या बढ़ाना, खासकर जहाँ प्रदूषण की मात्रा ज्यादा है, वहाँ पेड़-पोधों की संख्या बढ़ाकर प्रदूषण का मुकाबला किया जा सकता है।

वायु प्रदूषण को काबू में रखने के लिए जल प्रदूषण, मिट्टी प्रदूषण तथा संपूर्ण वातावरण प्रदूषण पर नियंत्रण होना चाहिए। पता नहीं इस मामले पर अभी तक पर्याप्त कदम क्यों नहीं उठाये गये, खासकर जब केंद्र तथा हर राज्य सरकार में एक पर्यावरण मंत्रालय है और उसका प्रधान उद्देश्य ही है- "देश के वातावरण को बचा के रखना"।

लेकिन यह बहुत दुख की बात है कि जहां प्रयोग की बात आती है वहां देश की भलाई अपनी और अपने राजनीतिक दल की भलाई से दूर चली जाती है। इस संबंध में राष्ट्रसंघ के सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals-SDG) द्वारा पर्यावरण और स्वस्थ जीवन धारण के लिए लक्ष्य रखा गया है और आर्थिक रूप से जीवन स्तर तथा रहन-सहन के तरीकों को बढ़ाने का कदम उठाया गया है। उम्मीद है कि इस कोशिश से देश प्रति पर्यावरण क्षेत्र में जो सुधार के कदम उठाये जायेंगे, उससे हमारे देश के नेताओं को मजबूर किया जाएगा। देश की प्रदूषण मात्रा को कम करने के लिए, इस क्षेत्र में स्वच्छ भारत अभियान कुछ हद तक सहायता भी कर रहा है।

अब वक्त है कुछ कर दिखाने का।
जल-थल-वायु प्रदूषण मुक्त भारत बनाने का॥

जल संचयन

संदीप सिन्हा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राणी मात्र के जीवन के लिए वायु के बाद अगर किसी चीज की सर्वाधिक आवश्यकता होती है तो वो है पानी। स्थिति यह है कि बिना पानी के मनुष्य से लेकर पशु-पक्षी, पेड़-पौधों तक किसी के भी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। लेकिन आज जिस तरह से मानवीय जरूरतों की पूर्ती के लिए निरन्तर व अनवरत भू-जल का दोहन किया जा रहा है, उससे साल दर साल भू-जल का स्तर गिरता जा रहा है।

पिछले एक दशक के भीतर भू-जल स्तर में आई गिरावट को अगर इस आंकड़े के जरिए समझने का प्रयास करें तो अब से दस वर्ष पहले तक जहाँ 30 मीटर की खुदाई पर पानी मिल जाता था, वहाँ अब पानी के लिए 60 से 70 मीटर तक की खुदाई करनी पड़ती है। साफ है कि बीते दस सालों में दुनिया का भू-जल स्तर बड़ी तेजी से घटा है और अब भी बदस्तूर घट रहा है, यह बड़ी चिन्ता का विषय है। केवल भारत की बात करें तो भारतीय केन्द्रीय जल आयोग द्वारा वर्ष 2014 में जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार देश के अधिकांश बड़े जलाशयों का जलस्तर वर्ष 2013 के मुकाबले घटता हुआ पाया गया था। आयोग के अनुसार देश के बारह राज्यों हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, त्रिपुरा, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तराखण्ड, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के जलाशयों के जलस्तर में काफी गिरावट पायी गई।

आयोग की तरफ से यह भी बताया गया कि 2013 में इन राज्यों का जलस्तर जितना अंकित किया गया था, वह काफी कम था। लेकिन 2014 में और भी कम हो गया है। गौरतलब है कि केन्द्रीय जल आयोग (सीडब्लूसी) देश के 85 प्रमुख जलाशयों की देख-रेख व भण्डारण क्षमता की निगरानी करता है। हालाँकि घटते जलस्तर को लेकर जब-तब देश में पर्यावरणविदों द्वारा चिन्ता जताई जाती रही है।

घटते भू-जल के लिए सबसे प्रमुख कारण तो उसका अनियंत्रित और अनवरत दोहन ही है। आज दुनिया अपनी जल जरूरतों की पूर्ति के लिए सर्वाधिक रूप से भू-जल पर ही निर्भर है। एक तरफ तो भू-जल का अनवरत दोहन हो रहा है तो वहीं दूसरी तरफ औद्योगीकरण के कारण पेड़-पौधों-पहाड़ों आदि में कमी आने से वर्षा में भी काफी कमी आई है। धरती के भू-जल दोहन के अनुपात में जल की प्राप्ति नही हो पा रही है।

यह एक कटु सत्य है कि अगर दुनिया का भू-जल स्तर इसी तरह से गिरता रहा तो आने वाले समय में लोगों को पीने का पानी मिलना मुश्किल हो

जाएगा। हालाँकि ऐसा कतई नहीं है कि कम हो रहे पानी की इस समस्या का हमारे पास कोई समाधान नहीं है। इस समस्या से निपटने के लिए सबसे बेहतर समाधान तो यही है कि बारिश के पानी का समुचित संरक्षण किया जाए और उसका आवश्यकता अनुसार उपयोग किया जाये।

बरसात के पानी को संरक्षित करने के लिए उसके संरक्षण माध्यमों को विकसित करने की जरूरत है। सरकार के साथ-साथ प्रत्येक जागरूक व्यक्ति का भी यह दायित्व है। समुचित संरक्षण माध्यमों के अभाव में वर्षा का जल व्यर्थ चला जाता है। अगर प्रत्येक घर में वर्षा जल संरक्षण के लिए उचित व्यवस्था हो तो जल-जरूरतों की पूर्ति के लिए भू-जल पर से लोगों की निर्भरता भी कम हो जाएगी व भू-जल का स्तरीय सन्तुलन बना रहेगा।

कुल मिलाकर कहने का अर्थ ये है कि जल संरक्षण के लिए लोगों को सबसे पहले जल के प्रति अपनी सोच में बदलाव लाना होगा। जल को खेल-खिलवाड़ की दृष्टि से देखने के बजाय अपनी जरूरत की एक सीमित वस्तु के रूप में देखना होगा। हालाँकि, ये चीजें तभी होंगी जब जल की समस्या के प्रति लोगों मे आवश्यक जागरूकता आएगी। जल संरक्षण का दायित्व दुनिया के उन तमाम देशों, जहाँ भू-जल स्तर गिर रहा है, सरकार समेत सम्पूर्ण समुदाय का है।

ग्लोबल वार्मिंग : एक गम्भीर समस्या

राजलक्ष्मी गांगुली
कनिष्ठ अनुवादक

ग्लोबल वार्मिंग - वैश्विक तापमान आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे न केवल मनुष्य, बल्कि धरती पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी त्रस्त है। हमारी धरती सूर्य की किरणों से उष्मा प्राप्त करती है जो वायुमंडल से गुजरती हुई धरती की सतह से टकराती हैं और फिर वहीं से परावर्तित होकर पुनः लौट जाती हैं। धरती का वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना है। इनमें से अधिकांश धरती के ऊपर एक प्राकृतिक आवरण बना लेती हैं। यह आवरण लौटती किरणों के एक हिस्से को रोक लेता है। गौरतलब है कि मनुष्यों, प्राणियों और पौधों के जीवित रहने के लिए कम से कम 16 डिग्री सेल्शियस तापमान आवश्यक होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रीनहाउस गैसों में बढ़ोतरी होने के कारण यह आवरण और भी सघन व मोटा होता जाता है। ऐसे में यह आवरण सूर्य की अधिक किरणों को रोकने लगता है और यहीं से शुरू होते हैं ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव।

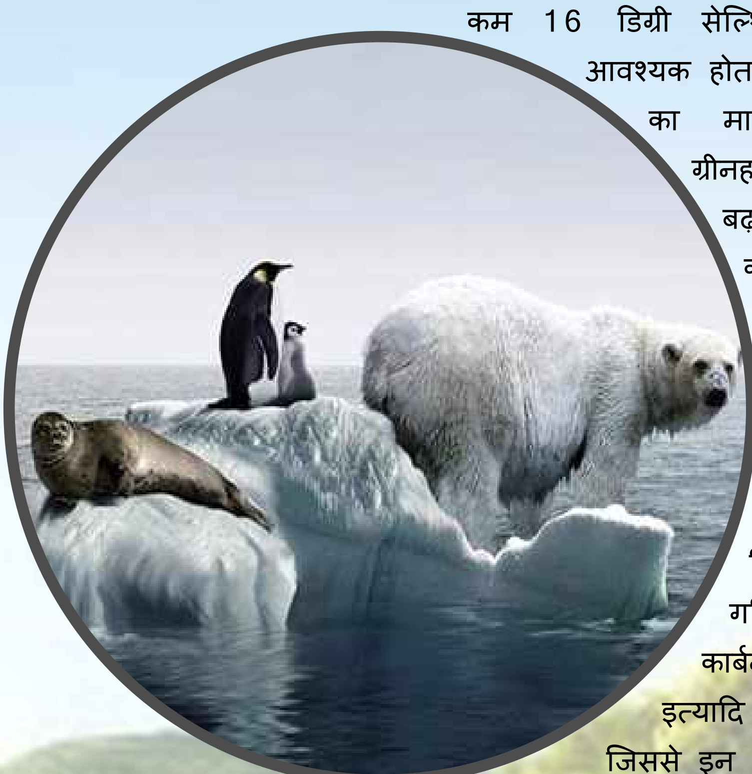

ग्लोबल वार्मिंग की वजह - ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार मनुष्य और उसकी गतिविधियां हैं। मनुष्य जनित इन गतिविधियों से कार्बन डायऑक्साइड, मिथेन, नाइट्रोजन ऑक्साइड इत्यादि ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है जिससे इन गैसों का आवरण सघन होता जा रहा है। यही आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है जिससे धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है। वाहनों, हवाई जहाजों, बिजली बनाने वाले संयंत्रों, उद्योगों इत्यादि से अंधाधुंध होने वाले गैसीय उत्सर्जन की वजह से कार्बन डाईआक्साइड में बढोतरी हो रही है। इसकी दूसरी वजह बड़ी संख्या में जंगलों का विनाश है। इसकी एक अन्य वजह क्लोरो-फ़्लोरो कार्बन (सीएफसी) है जो रेफ्रिजरेटर, अग्निशामक एवं वातानुकूलित संयंत्रों इत्यादि में इस्तेमाल की जाती है। यह धरती के ऊपर बने एक प्राकृतिक आवरण ओजोन परत को नष्ट करने का काम करती है। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली घातक किरणों को धरती पर आने से रोकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस ओजोन परत में एक बड़ा छिद्र हो चुका है जिससे किरणें सीधे धरती पर पहुंच रही हैं और इसे लगातार गर्म बना रही हैं। ध्रुवों पर सदियों से जमी बर्फ का पिघलना भी बढ़ते तापमान का ही नतीजा है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव - आशंका यही जताई जा रही है कि आने वाले समय में ग्लोबल वार्मिंग में और बढ़ोतरी

होगी। जलवायु परिवर्तन का सर्वाधिक नकारात्मक असर मनुष्य पर पड़ेगा। गर्मी बढ़ने से मलेरिया, डेंगू और यलो फीवर जैसे संक्रामक रोग बढ़ेंगे। वह समय भी जल्दी ही आ सकता है जब हममें से अधिकांश को पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने के लिए ताजा भोजन और सांस लेने के लिए शुद्ध हवा भी नसीब नहीं होगी। ग्लोबल वार्मिंग का पशु-पक्षियों और वनस्पतियों पर भी गहरा असर पड़ेगा। माना जा रहा है कि गर्मी बढ़ने के साथ ही पशु-पंक्षी धीरे-धीरे उत्तरी और पहाड़ी इलाकों की ओर प्रस्थान करेंगी, लेकिन इस प्रक्रिया में कुछ अपना अस्तित्व ही खो देंगे।

ग्लोबल वार्मिंग से बचने का उपायः वैसे संयंत्रों का प्रयोग कम करना चाहिए जिससे सी.एफ.सी गैस उत्सर्जित होती हैं जैसे वातानुकूलन मशीनें । ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए हमें अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए। साथ ही पेड़ों की कटाई को रोकने एवं जंगलों के संरक्षण पर बल देना होगा। वाहनों से निकलने वाली गैसों एवं धुएं का प्रभाव कम करने के लिए पर्यावरण मानकों का सख्ती से पालन करना होगा। बिजली से चलने वाले साधनों को सौर ऊर्जा से चलाया जाए। प्राकृतिक जल संसाधनों का नवीनीकरण करने से बचना चाहिए अन्यथा वे नष्ट हो जाएंगे ।

प्रकृति का न करें क्षरण
आओ बचाएं पर्यावरण

पेड़ भी उदास होते हैं

अरुण विकास
कनिष्ठ अनुवादक

बचपन के उस काल में
जब हम विद्यालय जाया करते
प्रार्थना के उपरांत
बिखरे हुए लिपटस
और कनेली के पत्तों को चुनते।

नजर जब पड़ती थी
चूने से रंगे उसके तनों पर
सहसा मालूम पड़ता
कि पेड़ भी उदास होते हैं
उस चूने की गंध से
जिसने ढंक दिया था
उसके अस्तित्व को।

हवा के थपेड़ों से हिलती टहनियाँ
मानो झुक जाना चाहती थीं
उसे पोंछ लेने को।

ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया
उन रंगे हुए पेड़ों की पीड़ा
खुद की पीड़ा बनती गई
और जब कहीं देखता हूँ
उन्हें उस हालत में
लगता है धो डालूँ उसे
ताकी खिल उठे वह फिर से
एक मीठी-सी मुस्कान के साथ।

पानी

सोनु कुमार चौधरी
आंकड़ा प्रविष्टक

पानी तो अनमोल है,
उसको बचा के रखिये।
बर्बाद इसे मत कीजिए,
जीने का सलीका सीखिए।।

पानी को तरसते हैं,
धरती में काफी लोग यहाँ।
पानी ही तो दौलत है,
पानी-सा धन भला कहाँ।।

पानी की है मात्रा सीमित,
पीने का पानी सीमित।
तो पानी को बचाइए,
है इसी में स्मृद्धि निहित।।

शेविंग या कार की धुलाई,
या जब करते हो स्नान।
पानी की जरूर बचत करें,
पानी से है धरती महान।।

पानी तो जीवन है,
पानी है गुणो की खान।
पानी ही तो सब कुछ है,
पानी है धरती की शान।।

पर्यावरण को न बचाया गया,
तो वो दिन जल्दी ही आएगा।
जब धरती पर हर इंसान,
बस 'पानी-पानी' चिल्लाएगा।।

रूपये पैसे धन दौलत,
कुछ भी काम न आएगा।
यदि इंसान इसी तरह,
धरती को लूट खाएगा।।

आने वाली पुश्तों का,
कुछ तो हम करें ख्याल।
पानी के बगैर भविष्य,
भला कैसे होगा खुशहाल।।

बच्चे-बूढ़े और जवान,
पानी बचाएँ बने महान।
अब तो जाग जाओ इंसान,
पानी में बसते हैं प्राण।।

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस - 2017

हर वर्ष की भांति वर्ष 2017 में भी हमारे कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन दिनांकः 01.09.2017 से 15.09.2017 तक सफलतापूर्वक किया गया। **हिन्दी पखवाड़ा** एवं **हिन्दी दिवस समारोह-2017 का उद्घाटन** माननीया प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) प.बंगाल के द्वारा दिनांक 01.09.2017 को किया गया। इस समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताएं यथा श्रुतलेखन एवं अनुवाद, टिप्पण एवं मसौदा लेखन, हिन्दी टंकण, क्विज, हिन्दी निबन्ध, हिन्दी वाद-विवाद, तथा अन्ताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कार्यालय के अधिकतर कर्मचारियों ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया तथा समारोह को सफल बनाने में योगदान दिया।

दिनांकः 14.09.2017 को हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह का संदेश कल्याण अधिकारी श्री मनोज कुमार मोवार के द्वारा कार्यालय के सभी कर्मियों को पढ़कर सुनाया गया। इस अवसर पर श्री रनेन्दु सरकार, वरिष्ठ उप महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र-I) एवं सभी शाखा अधिकारी उपस्थित थे। इस दिन कार्यालय के कर्मियों को यह संदेश भी दिया गया कि कार्यालय में अधिक से अधिक काम राजभाषा हिन्दी में किये जाएं।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन दिनांकः 15.09.2017 को किया गया। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया ने कार्यालय की **गृह पत्रिका "सोनार बांगला" के 12वें अंक का विमोचन** किया। प्रधान महालेखाकार द्वारा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु विभागीय **"चल वैजयंती शील्ड" प्रशासन (गोपनीय कक्ष)** को प्रदान की गई तथा गत वर्ष से आरंभ किये गये **व्यक्तिगत रूप से हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र-I) के श्री अवध किशोर शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक एवं श्री अर्णव कर,वरिष्ठ लेखापरीक्षक** को दिया गया। कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। श्री रनेन्दु सरकार, वरिष्ठ उप महालेखाकार, श्री उत्पल बनिक, उप महालेखाकार, श्री विजय एस, उप महालेखाकार तथा श्री मनोज कुमार मोवार, कल्याण अधिकारी द्वारा सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं उप-विजेताओं को प्रोत्साहित करने के लिए स्मृति चिन्ह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कर्मचारियों को उपहार प्रदान किए गए। सभी समूह अधिकारियों ने पखवाड़े के सफल आयोजन की प्रशंसा की, विशेषकर प्रधान महालेखाकार महोदया ने अपने अभिभाषण में हिन्दी कक्ष को पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए बधाई दी।

15 दिनों तक चले हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस समारोह का समापन वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी) द्वारा दिये गए अभिभाषण एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस - 2017

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस - 2017

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस - 2017

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस - 2017

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस - 2017

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस - 2017

राजभाषा प्रतियोगिताओ के परिणाम		
प्रतियोगिता : श्रुतलेखन एवं शब्दावली		
हिन्दी भाषी	पुरस्कार	**हिन्दीतर भाषी**
संतोष कुमार-III, वरि. लेखापरीक्षक	प्रथम	चंदन बनर्जी, वरि. लेखापरीक्षक
राम सिंह यादव, स.लेप.अ.	द्वितीय	बुद्धदेव धर , स.लेप.अ.
अजीत कुमार यादव, वरि. लेखापरीक्षक	तृतीय	शुभोजीत बनर्जी, वरि. लेखापरीक्षक
प्रतियोगिता : हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन		
राजीव कुमार, स.लेप.अ.	प्रथम	चंदन बनर्जी, वरि. लेखापरीक्षक
बागेश कुमार मेहता, स.लेप.अ.	द्वितीय	इंद्राणी सम्माद्दार, स.लेप.अ.
राम सिंह यादव, स.लेप.अ.	तृतीय	शुभोजीत बनर्जी, स.लेप.अ.
प्रतियोगिता : हिन्दी टंकण (संयुक्त रूप से)		
सोनु कुमार चौधरी, आंकड़ा प्रविष्टक	प्रथम	–
विकास कुमार, आंकड़ा प्रविष्टक	द्वितीय	–
अभिषेक कुमार, आंकड़ा प्रविष्टक	तृतीय	–
प्रतियोगिता : हिन्दी निबंध लेखन		
विकास कुमार, आंकड़ा प्रविष्टक	प्रथम	चंदन बनर्जी, लेखा परीक्षक
राजीव गिरी, आंकड़ा प्रविष्टक	द्वितीय	शुभोजित बनर्जी, वरि. लेखापरीक्षक
रिपु सूदन , व.लेखा परीक्षक	तृतीय	शुभोजित बनर्जी, वरि. लेखापरीक्षक
प्रतियोगिता : हिन्दी वाद-विवाद		
रिपु सुदन , वरि. लेखापरीक्षक	प्रथम	मधुरिमा बनर्जी, लेखापरीक्षक
राजीव गिरी, आकड़ा प्रविष्टक	द्वितीय	सजल रॉय, आंकड़ा प्रविष्टक
अजीत कुमार यादव, वरि. लेखापरीक्षक	तृतीय	शुभोजित बनर्जी, वरि. लेखापरीक्षक

प्रतियोगिता : क्विज़ प्रतियोगिता (संयुक्त रूप से)	
विजेता	**उप विजेता**
हरेन्द्र कुमार, आंकड़ा प्रविष्टक	शुभोजित बनर्जी, वरि. लेखापरीक्षक
संतोष कुमार, वरि. लेखापरीक्षक	बुद्धदेव धर , स.लेप.अ.
प्रभाकर कुमार, आंकड़ा प्रविष्टक	देवमाल्या लोध, स.लेप.अ.
जितेन्द्र कुमार, लेखापरीक्षक	संतोष कुमार सोनी, वरि. लेखापरीक्षक
प्रतियोगिता : अंताक्षरी (संयुक्त रूप से)	
विजेता	**उप विजेता**
कनिका मुखर्जी, वरि. लेखापरीक्षक	मधुरिमा बनर्जी, लेखापरीक्षक
विकास कुमार, आंकड़ा प्रविष्टक	अमृता बोस, स.लेप.अ.
शुभब्रतो दास, वरि. लेखापरीक्षक	दुर्गा बर्नवाल, वरि. लेखापरीक्षक
दिव्येन्दु चंदा, लेखापरीक्षक	शुभोजित बनर्जी, वरि. लेखापरीक्षक

राजभाषा हिन्दी में सर्वोत्तम कार्य करने हेतु वार्षिक "चल वैजयंती शील्ड" - **प्रशासन (गोपनीय कक्ष) अनुभाग**

राजभाषा हिन्दी में व्यक्तिगत रूप से सर्वोत्तम कार्य करने हेतु पुरस्कार - **श्री अवध किशोर शर्मा, व. लेखापरीक्षक (सा. एवं सा.क्षे. लेप)**

श्री अर्णव कर, व .लेखापरीक्षक (स्थानीय लेखापरीक्षा विभाग)

कल्याण अनुभाग - गतिविधियाँ

1. महिला-हित संवेदनशीलता कार्यक्रम का आयोजन -

27 अप्रैल 2017 को इस कार्यालय के ट्रेजरी बिल्डिंग्स इंस्टीट्यूट हॉल में महिला मुद्दों पर हमारे कर्मियों को संवेदनशील बनाने हेतु महिला-हित संवेदनशीलता पर एक पूर्ण दिवसीय कार्यशाला - सह - संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय " भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में लैंगिक समता - ये वक्त बदलना है " था।

कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य कार्यालय की महिला कर्मियों में महिला-हित संवेदनशीलता से संबंधित जागरूकता लाना था। संगोष्ठी में विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था तथा उन्होंने कामकाजी महिलाओं को आने वाली परेशानियों, महिलाओं की सुरक्षा संबंधी मुद्दों, कामकाजी महिलाओं को उपलब्ध विधिक विकल्प, कामकाजी महिलाओं के स्वास्थ्य कल्याण संबंधी मुद्दों पर अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग की मुख्य वक्ता श्रीमती मधुमिता बसु, प्रधान महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल, श्रीमती रूपवर्धिनी बी. आर अध्यक्ष कामकाजी महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न निवारण हेतु शिकायत समिति तथा श्रीमती वाई. राय चौधरी, प्रधान निदेशक थीं। अतिथि वक्ता समेत 150 से ज्यादा प्रतिभागियों ने इसमें हिस्सा लिया। उक्त कार्यक्रम कार्यालय की महिला कर्मियों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ। महिला कर्मियों ने आमंत्रित गणमान्य अतिथियों तथा मुख्य वक्ताओं के समक्ष अपने विचार तथा शंकाएं व्यक्त की तथा अतिथिगणों ने उनकी समस्याओं के निदान हेतु उपाय बताए तथा उनकी शंका दूर की।

2. आत्मरक्षा-सह-मार्शल आर्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन -

कार्यालय की महिला कर्मियों को सशक्त बनाने तथा किसी-भी परिस्थिति में आत्म विश्वास जगाने के उद्देश्य से 14 फरवरी 2018 को ट्रेजरी बिल्डिंग्स लॉज में "आत्मरक्षा-सह-मार्शल आर्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम" का आयोजन किया गया था। लगभग 90 महिलाओं तथा 10 पुरुष कर्मियों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रशिक्षण हेतु भारतीय स्काउट्स एवं गाइड की कप्तान तथा राष्ट्रीय स्तर की कराटे चैम्पियन श्रीमती मौमिता चक्रवर्ती को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपनी टीम के साथ मूलभूत आत्मरक्षा की तकनीक तथा शारीरिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

उक्त आत्म रक्षा कार्यक्रम से प्रतिभागी काफी संतुष्ट थे तथा समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम का आयोजन करने का अनुरोध किया।

3. कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कल्याण तथा उन्हें दैनिक तनाव और चिंता से राहत दिलाने के लिए कार्यालय में वर्ष 2017-18 में 4 " ध्यान सत्र " का आयोजन किया गया (2 जून 2017, 28 जुलाई 2017, 8 दिसंबर 2017 एवं 26 मार्च 2018)। यह सत्र हमारे कार्यालय के कर्मियों श्रीमति दीपाश्री बनर्जी, व. लेप. तथा रिपू सुदन, व. लेप. द्वारा ही आयोजित किया गया था जिनको अपने खाली समय में खिलाड़ियों, छात्रों, कामकाजी लोगों को ध्यान सत्र कराने का अनुभव है। ध्यान सत्र से कार्यालय में अच्छे माहौल के साथ-साथ प्रतिभागियों को संतुलित तथा संतोषप्रद जीवन-यापन करने में सहायता मिली।

कल्याण अनुभाग - गतिविधियाँ

कल्याण अनुभाग - ट्रेडमील का उद्घाटन

कल्याण अनुभाग - गतिविधियाँ

महिला-हित संवेदनशीलता कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य वक्ता (दायें से बायें) सुश्री शिखा सरकार आदित्य, सदस्य, महिला आयोग, पश्चिम बंगाल, सुश्री अपराजिता राय, भा. पु. से. अपर उपायुक्त (पुलिस) और सुश्री मधुमिता बसु, प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल

प्रशासन अनुभाग I एवं III से

नवनियुक्तियाँ

स्रोत :- प्रशासन- I अनुभाग

श्री सुधाकर सिंह,सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (वाणिज्यिक लेखापरीक्षा)
श्री संजीब कुमार मोहन्ती, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (वाणिज्यिक लेखापरीक्षा)

सेवानिवृत्ति

स्रोत :- प्रशासन- III अनुभाग

श्री कल्याण चक्रबर्ती, वरिष्ठ निजी सचिव (1983-2018)
श्री सुकान्त बोस, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (1978-2018)
श्री असित सरकार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (1988-2018)
श्री नंद मित्रा (घोष), वरिष्ठ लेखापरीक्षक (1982-2017)
श्री कृष्ण दास कुंडू, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (1983-2017)
सुश्री सबिता चौधरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (1995-2017)

यह विशालकाय बरगद वृक्ष कोलकाता के आचार्य जगदीश चन्द्र बोस भारतीय वनस्पति उद्यान का मुख्य आकर्षण है एवं अपने बृहद्तम जड़ों के कारण विश्व-विख्यात है। वनस्पतिक नाम - फिकस बँधालेंसिस एल., परिवार : मोरसी के अंतर्गत आने वाले इस वृक्ष की आयु 250 वर्षों से अधिक है और यह लगभग 3616 अवलंबी जड़ों सहित 1.6 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। वनस्पति जगत में एक अजूबा, इस वृक्ष को इसके महाकाय छत्र, जो अतिविशाल क्षेत्र को आवृत करता है, के लिए "गिनीज बुक ऑफ वल्ड रिकॉर्ड " में स्थान दिया गया है।